सेवा में,

सचिव
संगीत नाटक अकादमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह रोड़
नई दिल्ली – 110001

आई0 सी0 एच0 योजनान्तर्गत अनुदान की तृतीय किश्त के भुगतान हेतु आवेदन पत्र।

महोदया,

निवेदन करना है कि समूहन कला संस्थान (पता – एफ 6 के सामने, रैदोपुर कॉलोनी, आज़मगढ़– 276001 उ0 प्र0) को आई0 सी0 एच0 योजनान्तर्गत अनुदान प्राप्त है, जिसका संदर्भ संख्या 28-6/ICH Scheme/120/2014-15/11368 Dt. 04-02-2015 है।

इस संदर्भ में रिर्पोट के रूप में निम्नलिखित सामग्री पूर्व में भी भेजी जा चुकी है और पुनः संलग्न है –

- संदर्भित विधा धोबिया, कहरउवा एवं जांघिया नृत्य के विषय में संकलित विवरण।
- धोबिया, कहरउवा एवं जांघिया नृत्य के संकलित फोटोग्राफ्स।
- पुनरूद्धार, संचरण, एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से तैयार की गई प्रदर्शनी की कॉपी।

परियोजना को पूर्ण करने के क्रम में विधा के प्रसार–संचरण के लिए पाँच प्रदर्शन कराये गये है। इस क्रम में निम्नलिखित सामग्री संलग्न है।

Utilization Certificate & Account Report
Invitation Card & Brouchure
Press Cutting

आप से सादर अनुरोध है कि अनुदान की किश्त भुगतान करने की कृपा करे।

इसी निवेदन के साथ।

सादर !

आवेदक

(राजकुमार शाह)
निदेशक, समूहन कला संस्थान
सम्पर्क सूत्र/Mob. No. 09451565397

आई0 सी0 एच0 योजनान्तर्गत परियोजना से संदर्भित सामग्री

संदर्भ संख्या 28–6/ICH Scheme /120/2014–15/11368 Dt. 04–02–2015

परियोजना से संदर्भित निम्नलिखित सामग्री संलग्न है–

1 संदर्भित विधा धोबिया, कहरउवा एवं जाधिंया नृत्य के विषय में संकलित विवरण।
2 धोबिया, कहरउवा एवं जाधिंया नृत्य के संकलित फोटोग्राफ्स।
3 पुनरुद्धार, संचरण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से तैयार प्रदर्शनी की डमी कॉपी एवं कार्यक्रम की रुपरेखा।
4 विडियोग्राफ।

संदर्भित विधा धोबिया, कहरउवा एवं जाधिंया नृत्य के विषय में संकलित विवरण–

धोबिया नृत्य

धोबिया नृत्य भोजपुरी क्षेत्र के लोक नृत्य परम्परा में सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्त रस धारा है। लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ये ग्रामीणों के जीवन में उल्लास भरने का काम करते हैं। अपने नाम के अनुरूप ''धोबिया नृत्य'' धोबी जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।

धोबिया नृत्य का कोई लिखित साहित्य या पुस्तक नहीं है। यह मौखिक रूप से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में जाता रहा है। धोबिया नृत्य की परम्परायें सभी क्षेत्रों में मौखिक ही है। धोबी समुदाय के अनपढ़ लोग ही इस परम्परा के वाहक हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस नृत्य को आगे ले जाते हैं। इनके नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अन्तरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती हैं और यही धोबिया नृत्य की प्रमुख विशेषता है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। इस नृत्य में लगभग 10 से 15 कलाकार होते हैं, जिनमें से कुछ लोग वाद्य बजाते हैं और कुछ नृत्य करते हैं।

धोबिया नृत्य में घाघरा, पैजामा, पगड़ी आदि परिधानों का इस्तेमाल होता है। इस नृत्य में परम्परागत वेशभूषा कुर्ता, पैजामा, पगड़ी और नर्तक वृन्द सिर पर पगड़ी के साथ शरीर पर एक कुर्तीनुमा वस्त्र और घाघरा पहनते हैं, जिसमें कमर पर एक चौड़ी पट्टी में बहुत सारी घण्टियां लगी होती हैं, जिसे कमर को आगे–पीछे लचकदार झटके के साथ नृत्य किया जाता है। नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वाद्य यन्त्रों के साथ संगत पूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है जो विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं। वाद्य यन्त्रों में पखावज, कसावर, डेढ़ताल, मजीरा, घण्टी, रणसिंहा का प्रयोग होता है।

इनके गीतों में कुछ पौराणिक उपख्यान और देवी देवताओं का स्तुति वन्दन आदि भी होता है। इसके अलावा गायन में सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक कुरीतियों को भी रोचक ढ़ंग से गाया जाता है। प्रकृति ही उनकी गुरू होती है। जिसके आंचल में बैठकर इन लोक कलाओं की ककहरी बनती है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, वृक्ष वनस्पतियों, जीवो, पशुओं का जिक्र इनके गीतों में होता है।

इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है।

बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बदल गया है कि धोबिया नृत्य जैसे पारम्परिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है।

जांघिया अथवा जांगिया / फरूवाही नृत्य

जांघिया अथवा जांगिया नृत्य विशेषतः यादव (अहिर) समुदाय का जातिय नृत्य है, इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में इसे फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक के कूद कर नाचने और तरह–तरह के करतब दिखाने को इस नृत्य में शामिल करने के कारण, जिसे स्थानीय भाषा में फर्री कहा जाता है, इसे फरूवाही नृत्य कहा जाता है। अहीर जाति के नाम पर इसे अहिरवा और नृत्य की वेशभूषा में एक विशेष प्रकार का जांघिया, जिसपर घुंघरू टंके होते हैं, के कारण इसका नाम जांघिया नाम प्रचलित हुआ है। यह नृत्य भोजपुरी भाषी इलाकों, पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के यादव समुदाय में पाया जाता है।

इस समुदाय के लोगों में मान्यता है कि यह भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य है। इसकी शुरूआत द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा हुई है। भगवान श्रीकृष्ण जब ग्वाल सखाओं के संग गाय चराते थे तो उस समय को व्यतीत करने के लिए और कंस की सेना के समानान्तर अपने समुदाय के लोगों को सशक्त बनाने या शारीरिक सौष्ठव प्राप्त करने हेतु इस नृत्य शैली का विकास हुआ।

भौगोलिक भिन्नता अथवा क्षेत्रीयता के आधार पर अलग–अलग स्थानों पर इसमें थोड़ी भिन्नता भी दिखाई देती है। साथ ही इनके गीत–संगीत में क्षेत्रीयता और भाषा (स्थानीय बोली) का फर्क भी दिखता है। स्थानीयता का यही पुट नृत्य के मूवमेन्ट और वेशभूषा में भी देखने को मिलती है। वेशभूषा में कहीं घुंघरू युक्त जांघिया का प्रयोग मिलता है तो कहीं नहीं मिलता। कहीं कलाकार केवल धोती गंजी पर नृत्य करते हैं तो कहीं राधा कृष्ण के प्रसंग या लीला के अभिनय को नृत्य में शामिल करते हैं। कहीं पूरी तरह से कृष्ण की तरह वस्त्र (कछनी, अंगरखा, मुरली, जांघिया) धारण करते हैं। इन सभी में घुंघरू टंके हुए जांघिया और शारीरिक सौष्ठव (मार्शल आर्ट) वाले मूवमेन्ट अधिकांशतः पाये गये हैं।

नृत्य के दौरान नर्तक शारीरिक सौष्ठव का प्रदर्शन भी करते हैं। लाठियों के सहारे तरह–तरह के करतब नृत्य के समय किया जाता है। लाठी के उपर चढना, उसको भांजना, कांधे पर लाठी रखकर उसपर दूसरे नर्तक का चढकर बांसुरी बजाना, नृत्य करना इत्यादि भी शामिल होता है। एक प्रकार से यह शारीरिक करतब का प्रदर्शन भी है। इसमें प्रयुक्त वाद्यों में ढ़ोलक, नगाड़ा, टिमकी, करताल अर्थात फार (बैलों के हल में लोहे का फार प्रयुक्त होता है) आदि मुख्य है।

बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बदल गया है कि जांघिया नृत्य जैसे पारम्परिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है। एक तरफ पूर्व की पीढ़ी के आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट

दिखाई दे रही है। तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ो को इसे अपनाने के लिए जोर नहीं देना चाहते। धन प्रधान समाज में ये पारम्परिक सन्दर्भो में अपने दायित्व से विमुख होने के लिए मजबूर हैं। विकल्प केवल यही शेष है कि इस 'ज्ञान' को इसके पारम्परिक विद्यालय में ही समय रहते सवाँर लिया जाय और इस हुनर की निरन्तरता बनायी रखी जाए।

कहरउवा नृत्य

कहरउवा नृत्य भोजपुरी क्षेत्र की एक लोक परम्परा है जो लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ये अपने नाम के अनुरूप "कहरउवा नृत्य" कहांर और गोंड़ जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।

इस जाति के लोग अशिक्षित थे। अतः जाति समुदाय के लोग काम काज परिश्रम आदि से जब फुर्सत पाते थे तो लोकरंजन के लिए इस नृत्य का विकास हुआ, जिसे इन जातियों ने अपने जातिय रीति–रिवाज, संस्कार एवं उत्सव आदि में करने लगे। कुछ विद्वानों का मानना है कि कहांर और गोंड़ जाति के ये नृत्य दो अलग–अलग शाखाएं हैं। मगर इसमें पर्याप्त समानताएं देखने को मिल रही हैं। इस पारम्परिक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले वादय में 'हुड़का' ही प्रमुख वादय है, जो कहांर और गोंड़ जाति दोनों में एक समान है। इस परम्परा के लोग इस नृत्य का उद्भव भगवान शंकर से मानते हैं क्योंकि हुड़का हुबहू डमरू जैसा ही डमरू से बड़े आकार का एक वादय है जो सिहोर की लकड़ी से बना होता हैं, जिस पर चमड़ा रस्सी के सहारे मढ़ा होता है और रस्सी के खिंचाव से इसकी आवाज भी बदलती है। इस परम्परा के लोग मानते हैं कि शंकर जी के डमरू बजाने से जिस महेश्वर सूत्र की उत्पत्ति हुई है, वहीं से इस हुड़का की उत्पत्ति हुई है।

इस नृत्य में हुड़का के अतिरिक्त ढ़ोलक, झाल (मजीरा) आदि वादय भी बजाये जाते हैं। नृत्य में पुरूष ही स्त्री का वेश धरते हैं और एक विदुषक पात्र भी होता है जिसे लबार कहते हैं। इनके गीतों में समाज की कुरीतियों, विसंगतियों, शोषण आदि पर व्यंग्य भी होता है और अपनी पीड़ा का स्वतःस्फूर्त, इजहार भी है। इनके गीतों में देवी–देवता की स्तुति आदि भी होती है। ऐसी मान्यता है कि उच्च जाति के लोग पुत्र प्राप्ति की कामना से मनौती मानते थे और गंगा किनारे मां आंचल फैलाती थी और उसपर ये लोग नृत्य करते हैं। तभी मनौती पूरी मानी जाती है। इस प्रकार से यह नृत्य सामाजिक एकीकरण के सूत्र के रूप में देखी जा सकती है। इस अशिक्षित समाज इनकी यह परम्परा केवल वाचिक रूप में ही है।

यह लोक नृत्य वर्तमान में समाज में आंशिक रूप से ही सुरक्षित है क्योंकि बदलते समय के हिसाब से ये अपने को पिछड़ा महसूस करते हैं और रोजी–रोटी के लिए अन्य पेशे की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। एक तरफ पारिवारिक पेशा ही समाप्त हो रहा है तो दूसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के उच्च वर्ग द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने या आत्म सम्मान न पा पाने के कारण इससे दूर हो रहे हैं और अगली पीढ़ी को पर्याप्त रूप से इसके लिए प्रमोट नहीं कर रहे हैं। समाज को इस बात के लिए जागरूक होना चाहिए कि अपनी लोक परम्पराओं और विधाओं को जीवित रखकर ही अपने अतीत को जीवित रख सकते

इन सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को कई प्रकार के खतरे दिखाई पड़ रहें हैं–

1- परम्परागत कलाकारों द्वारा आजीविका हेतु अपने पैतृक कार्यों से विलग होना, जिससे इन विधाओं के अस्तित्व को भी खतरा हैं।

2- अगली पीढ़ी द्वारा इन परम्पराओं को न अपनाए जाने से इन विधाओं के विलुप्त होने का खतरा हैं।
3- पारम्परिक सामाजिक बन्धनों का क्षीण होना जिसमें पहले इन विधा के कलाकारों की महत्वपूर्ण सामाजिक सहभागिता हुआ करती थी ।
4- व्यवसायीकरण के दौर में मंनोरजंन के बढ़ते अन्यान्य साधनो के कारण जन समुदाय का इन विधाओं को विस्मृत और उपेक्षित किया जाना।
5- सरकार और अन्य संगठनो द्वारा इन परम्परागत कलाकारों को लाभ न पहुँचना ।
6- बदलते दौर के साथ इन विधाओं के पारम्परिक स्वरूप में तेजी से बदलाव का होना जिससे इसके मूल स्वरूप को क्षति हुई है।

उपरोक्त कारणों से इस पारम्परिक तत्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को खतरा है।

संरक्षण के उपाय –

1- इन जातीय परम्पराओं को सुरक्षित रखने के लिए इन्हे व्यापक प्रचार प्रसार के द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इनके दस्तावेजीकरण के लिए खोज एवं पहचान के साथ शोधपूर्ण आलेखन और उसका प्रकाशन किया जाना चाहिए।
2- समाज में इसके व्यवहारिक स्वरूप को बचाए रखने के लिए इन दलों को वर्तमान समय अनुरूप शिक्षण–प्रशिक्षण और इनकी कला के माध्यम से आर्थिक संरक्षण प्रदान की जानी चाहिए।
3- इनका संवर्धन इस प्रकार करना होगा जिससे ये अपने को उपेक्षित न महसूस करें और इस कला को अपनायें रखने में वे आत्मसम्मान का अनुभव करें।
4- अगली पीढ़ी इस विधा को अपनाने के लिए उत्साहित हो, ऐसे कार्यक्रमों को लम्बे समय तक संचालित करना और इसमें इनकी भागीदारी को प्रोत्साहन देने के लिए सुविधाएँ प्रदान करना होगा।
5- स्थानीय/ राज्य /राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर इनके प्रदर्शनों/आयोजनों को बढ़ावा देना होगा।
6- इनके स्तर में सुधार के लिए इन्हे वेश–भूषा, वाद्य यंत्र, उन्नत स्थिति प्राप्त करने हेतु कार्यशालायें एवं इसी प्रकार की अन्य सुविधाएं प्रदान करनी होगी।

टूटती सामाजिक कड़ियों ने इन विधाओं को भारी क्षति पहुचाई है। सामाजिक स्तर पर यदि इनके हिस्से का सम्बल और आत्मसम्मान प्राप्त होता रहे तो यह इन कलाकारों के लिए संजीवनी सिद्ध होगी।
बदले हुए सामाजिक परिवेश में पहले की तरह सामाजिक रीति–रिवाजों में इसका चलन समाप्ती के कगार पर है। अतः इस समुदाय के लोगों और इन कलाकारों/दलों को मंच देने के अवसर की वृद्धि करने पर ही इनकी सहभागिता में बढ़ोत्तरी हो सकती है।

<u>धोबिया नृत्य के सम्पर्कित दल</u> :–

छोटेलाल एवं साथी
ग्राम–गोसाईपुर, पो0–मोहाव,
थाना–चोलापुर, जिला–वाराणसी

सुनील कुमार एवं साथी
ग्राम व पो0–मरदह, थाना–मरदह,

तहसील–सदर, जिला–गाजीपुर

जीवन राम एवं साथी
ग्राम–अरखपुर, पो0–पाण्डेयपुर राधे,
वि0 ख0–मरदह, थाना–बिरनों
जिला–गाजीपुर

उमेश कन्नौजिया एवं साथी
ग्राम व पो0–उबारपुर, तहसील–लालगंज
जिला–आजमगढ़

पुनरुद्धार, संचरण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से उपरोक्त में से सुनील कुमार, जीवन राम एवं उमेश कन्नौजिया का दल सक्रिय है एवं इनके समूह के साथ कार्य करके इस विधा को Uplift किया जा सकता है।

जांघिया/फरूवाही नृत्य के सम्पर्कित दल :–

बिकाऊ राम एवं साथी
ग्राम–भोजपुर, पो0–सुखपुरा
जिला–बलिया

सुराली सरोज एवं साथी
ग्राम–महमूदपुर, पो0–करहां
जिला–मऊ

शीतला प्रसाद वर्मा एवं साथी
ग्राम–शाहजहांपुर,
देवकाली रोड, जिला–फैजाबाद

मुकेश एवं साथी
मकान नं0–10/5/119, परिक्रमा मार्ग,
कौशिल्या घाट, अयोध्या, जिला–फैजाबाद

छेदी यादव एवं साथी
ग्राम–बेलवां, पो0–ब्रम्हपुर, थाना–झगहां
तहसील–चौरीचौरा, जिला–गोरखपुर

रामज्ञान यादव एवं साथी
ग्राम–राजी जगदीशपुर, टोला दो सौ कट्ठा
तहसील–चौरीचौरा, जिला–गोरखपुर

इनमें से पुनरुद्धार, संचरण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से शीतला प्रसाद वर्मा, मुकेश, छेदी यादव, रामज्ञान यादव का दल सक्रिय है एवं इनके समूह के साथ कार्य करके इस विधा को Uplift किया जा सकता है। बिकाऊ राम, सुराली सरोज, रामज्ञान यादव के दल के साथ पुनःसंरचना की आवश्यकता है।

कहरउवा नृत्य के सम्पर्कित दल :–

मोहन गोंड एवं साथी
ग्राम–भोजपुर, पो0–सुखपुरा
जिला–बलिया

रंगलाल गोंड एवं साथी
ग्राम–परिखरा, पो0–टीखमपुर
थाना–बांसडीह रोड, जिला–बलिया

अभिराज गोंड एवं साथी
ग्राम–अमेठी, पो0–बिठुवां,
लालगंज, जिला–आजमगढ़

शीतला प्रसाद वर्मा एवं साथी
ग्राम–शाहजहांपुर,
देवकाली रोड, जिला–फैजाबाद

राममूरत प्रजापति एवं साथी
ग्राम–बेला, पो0–जगत बेला,
जिला–गोरखपुर

पुनरुद्धार, संचरण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से इनमें से सभी दलों के साथ पुनःसंरचना की आवश्यकता है।

नोट – परियोजना की विधाओं पर संकलित सामग्री के क्रम में फोटोग्राफ्स और विडियोग्राफी संलग्न है। आवेदन के मूल प्रस्ताव में 15 लाख 76 हजार रूपये का बजट दिया गया था जिसके सापेक्ष रूपये दो लाख का अनुदान स्वीकृत हो सका है, जिससे इन विधाओं की आवासीय कार्यशाला संभव नही हो सकी, जो अगली आवेदित परियोजना में की जायेगी। पुनरुद्धार, संचरण एवं प्रदर्शन के उद्देश्य से संकलित फोटोग्राफ्स एवं विवरण से एक प्रदर्शनी तैयार की गई जिसका प्रदर्शन और विधाओं का सीमित संख्या में आयोजन भी अभीष्ट उद्देश्य के लिए किया गया। जिससे इनका पुनरुद्धार, संचरण एवं प्रदर्शन का लक्ष्य भी प्राप्त हो सके। संकलित फोटोग्राफ्स, तैयार प्रदर्शनी की डमी कॉपी एवं कार्यक्रम की विडियोग्राफी संलग्न है।

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य क
चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य के
चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांधिया नृत्य के चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांधिया नृत्य के चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य के चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य के चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य
चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्श

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य
चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्श

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत
चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रद

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत
चित्रो की प्रदर्शनी एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रद

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन

समूहन कला संस्थान

धोबिया नृत्य भोजपुरी क्षेत्र के लोक नृत्य परम्परा में सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्त रस धारा है। लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ये ग्रामीणों के जीवन में उल्लास भरने का काम करते हैं। अपने नाम के अनुरूप ''धोबिया नृत्य'' धोबी जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।

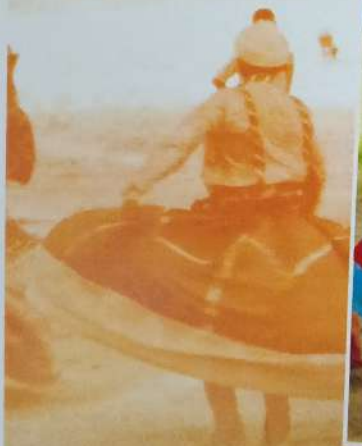

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन

समूहन कला संस्थान

उत्तर प्रदेश राज्य के पूर्वी प्रदेश के विभिन्न जनपदों के विभिन्न ग्रामों की पारम्परिक लोक संस्कृति धोबिया में भोजपुरी की तीन उपभाषाओं में से इस नृत्य में प्रयुक्त होने वाली बोली मुख्यतया पश्चिमी भोजपुरी है। लेकिन धोबिया गायन में जिलेवार भोजपुरी के बोल–चाल में थोड़ा सा भेद स्पष्ट दिखाई पड़ता है और यह भेद प्रकृतिगत कारणों से है।

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

धोबिया नृत्य का कोई लिखित साहित्य या पुस्तक नहीं है। यह मौखिक रूप से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में जाता रहा है। धोबिया नृत्य की परम्परायें सभी क्षेत्रों में मौखिक ही है। धोबी समुदाय के अनपढ़ लोग ही इस परम्परा के वाहक हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस नृत्य को आगे ले जाते हैं। इनके नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अन्तरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती हैं और यही धोबिया नृत्य की प्रमुख विशेषता है। इसके गायन में परिवेश के अनुरूप कुछ शब्दों को आशु कला के जैसे भी अपना लिया जाता रहा है। भोजपूरी के साथ–साथ इसमें क्षेत्रीयता की भी पर्याप्त झलक दिखाई देती है।

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

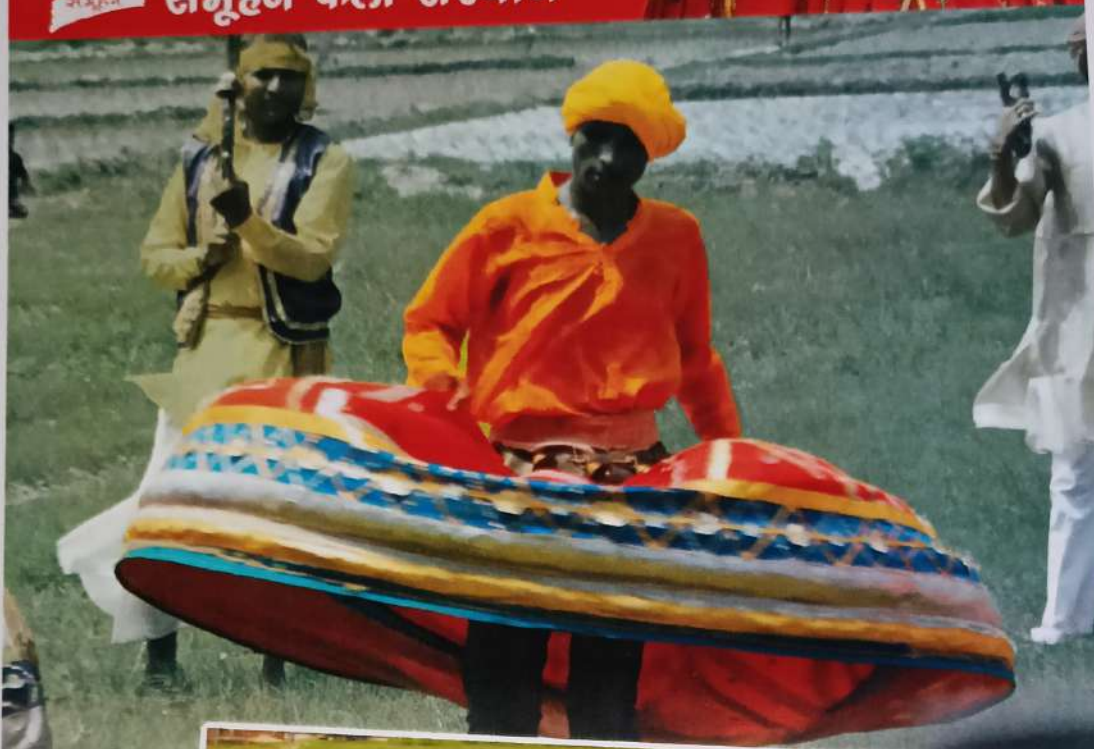

खांटी लोक में जन्मा धोबिया नृत्य एक प्रदर्शनकारी कला है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। इस नृत्य में लगभग 10 से 15 कलाकार होते हैं, जिनमें से कुछ लोग वाद्य बजाते हैं और कुछ नृत्य करते हैं। धोबिया नृत्य में घाघरा, पैजामा, पगड़ी आदि परिधानों का इस्तेमाल होता है। इस नृत्य में परम्परागत वेशभूषा कुर्ता, पैजामा, पगड़ी और नर्तक वृन्द सिर पर पगड़ी के साथ शरीर पर एक कुर्तीनुमा वस्त्र और घाघरा पहनते हैं, जिसमें कमर पर एक चौड़ी पट्टी में बहुत सारी घण्टियां लगी होती हैं, जिसे कमर को आगे–पीछे लचकदार झटके के साथ नृत्य किया जाता है।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

नर्तक के कमर में एक चौड़ी पट्टी जिसपर ढेर सारी घण्टीयां लगी होती हैं, नृत्य में नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वादय यन्त्रों के साथ संगत पूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है जो विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं।

वाद्य यन्त्रों में पखावज, कसावर, डेढ़ताल, मजीरा, घण्टी, रणसिंहा का प्रयोग होता है। एक व्यक्ति मृदंग बजाता है और कुछ कलाकार घण्टी, डेढ़ताल (डण्डी) एवं झाल (मजीरा) एक साथ एक लय में बजाते हैं। गायकों एवं वाद्य यन्त्रों को बजाने वाले पंक्तिबद्ध होकर कभी खड़े रहकर तो कभी घूमकर अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं।

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

एक नर्तक लिल्ली घोड़ी को तेज दौड़ाते हुए चारों तरफ चक्कर लगाता है। उसी के साथ–साथ हंसोड़ भी तेजी से दौड़ते हुए घूम–घूम कर नृत्य करता है। अन्य नर्तक जो घाघरा पहने होते हैं और कमर में घण्टी बांधे रहते हैं। गोल–गोल घूमकर वृहद आकार का घाघरे से घेरा बनाते हैं। लिल्ली घोड़ी का प्रयोग प्रारम्भ में नहीं था, क्योंकि यह नृत्य श्रम से उपजा है। इसकी शुरूआत और विकास श्रम के बाद फुर्सत के समय को व्यतीत करने के लिए हुआ। अत: अन्य वाद्य एवं लिल्ली घोड़ी का समावेश बाद में ही हुआ जान पड़ता है।

इनके गायन में कुछ पौराणिक उपख्यान और देवी देवताओं का स्तुति वन्दन तथा सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक कुरीतियों को भी रोचक ढ़ंग से गाया जाता है। प्रकृति ही उनकी गुरू होती है। जिसके आंचल में बैठकर इन लोक कलाओं की ककहरी बनती है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, वृक्ष वनस्पतियों, जीवो, पशुओं का जिक्र इनके गीतों में होता है।

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है। इनकी हुनर और कुशलता के आगे 'ज्ञान' शब्द फीका पड़ जाता है। इनकी विधा के सन्दर्भ में ज्ञान इनके पारम्परिक अभ्यास का कुशल परिचायक है और इसके लिए इन्हे किसी उच्च शिक्षा को प्राप्त करने के लिए किसी कॉलेज या विश्वविद्यालय की आवश्यकता नहीं होती। ये पीढ़ी दर पीढ़ी परिवार और प्रकृति के आंगन में अपने पुरखों के और बड़ो के संरक्षण में स्वतः स्फूर्त अभ्यास से न केवल कुशल बल्कि इतने पारगंत हो जाते हैं जो किसी उच्च प्रशिक्षण वाले महाविद्यालय द्वारा प्राप्त करना मुश्किल जान पड़ता है।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

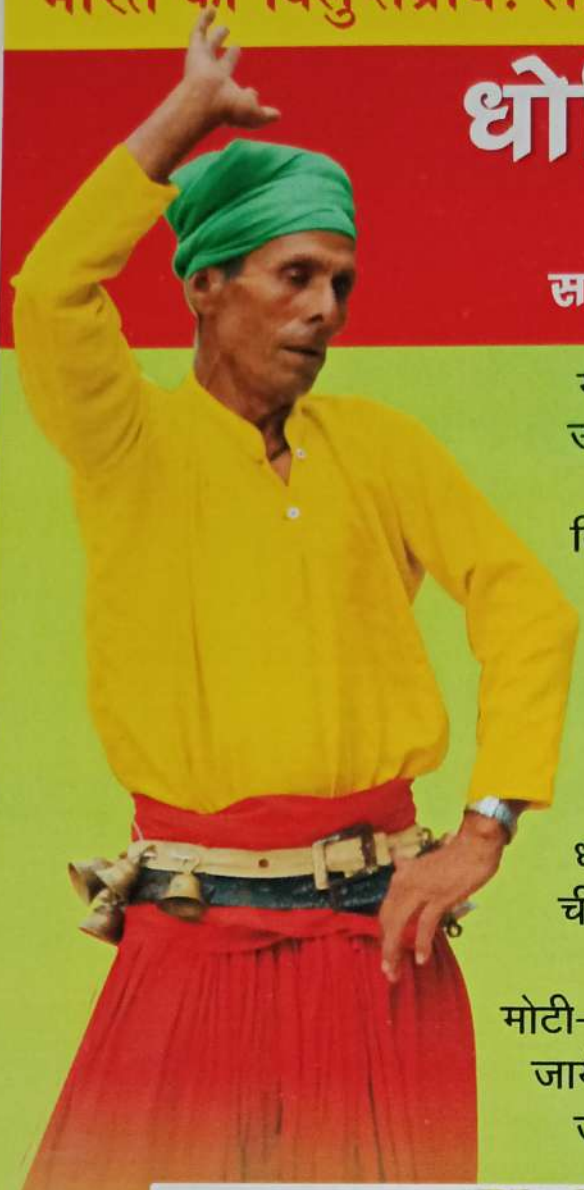

यह समुदाय शैक्षिक दृष्टि से उन्नत नहीं रहा है। इनके गीत मौखिक परम्पराओं से ही विकसित हुए हैं, जिसमें सिर्फ मनोरंजन ही नहीं अपनी पीड़ा का भी प्रकटिकरण मिलता है और इनके पारम्परिक काम–काज की झलक भी दिखती है। धोबी–धोबिन के संवाद जैसी चीजें भी इनके गीतों में मिलती हैं। जैसे–

मोटी–मोटी रोटिया पकइहा हो बरैठिन
जाये के पड़ी धोबी घाट हो धनिया
जाये के पड़ी धोबी घाट हो ।

धोबिया नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

ज्ञान का सम्बन्ध शास्त्रज्ञता से है ओर हुनर तथा कुशलता का सम्बन्ध लोकज्ञता से है। शास्त्रज्ञता ने लोकज्ञता को पर्याप्त सम्मान नहीं दिया है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण आज के वर्तमान आधुनिक समाज में इन पारम्परिक कलाओं की स्थिति कैसी है, यहीं जान लेना पर्याप्त होगा।

एक तरफ पूर्व की पीढ़ी के आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट दिखाई दे रही है। तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ो को इसे अपनाने के लिए जोर नहीं देना चाहते। पारिवारिक पेशा ही जब समाप्त हो रहा हो और रोजी–रोटी का संकट पैदा हो गया हो तो धन प्रधान समाज में ये पारम्परिक सन्दर्भो में अपने दायित्व से विमुख होने के लिए मजबूर हैं।

विकल्प केवल यही शेष है कि इस 'ज्ञान' को इसके पारम्परिक विद्यालय में ही समय रहते सवाँर लिया जाय और इस हुनर की निरन्तरता बनायी रखी जाए।

जांघिया / फरूवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

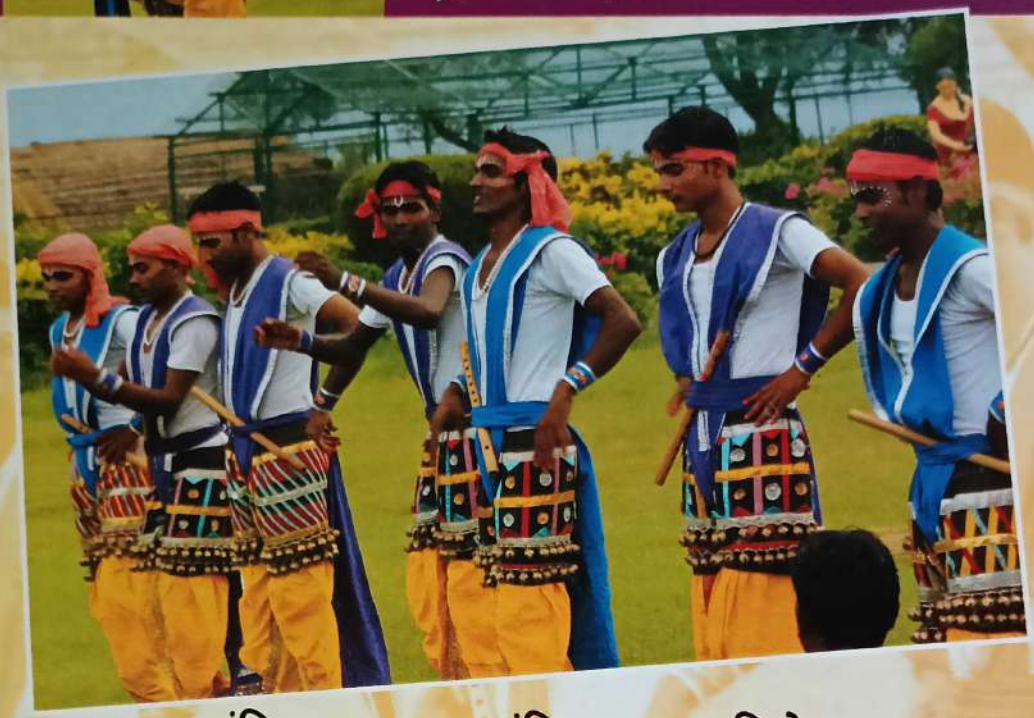

जांघिया अथवा जांगिया नृत्य विशेषतः यादव (अहिर) समुदाय का जातिय नृत्य है, इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में इसे फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक के कूद कर नाचने और तरह-तरह के करतब दिखाने को इस नृत्य में शामिल करने के कारण, जिसे स्थानीय भाषा में फर्री कहा जाता है, इसे फरूवाही नृत्य कहा जाता है।

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

अहीर जाति के नाम पर इसे अहिरवा और नृत्य की वेशभूषा में एक विशेष प्रकार का जांघिया, जिस पर घुंघरू टंके होते हैं, के कारण इसका नाम जांघिया नाम प्रचलित हुआ है। यह नृत्य भोजपुरी भाषी इलाकों, पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के यादव समुदाय में पाया जाता है।

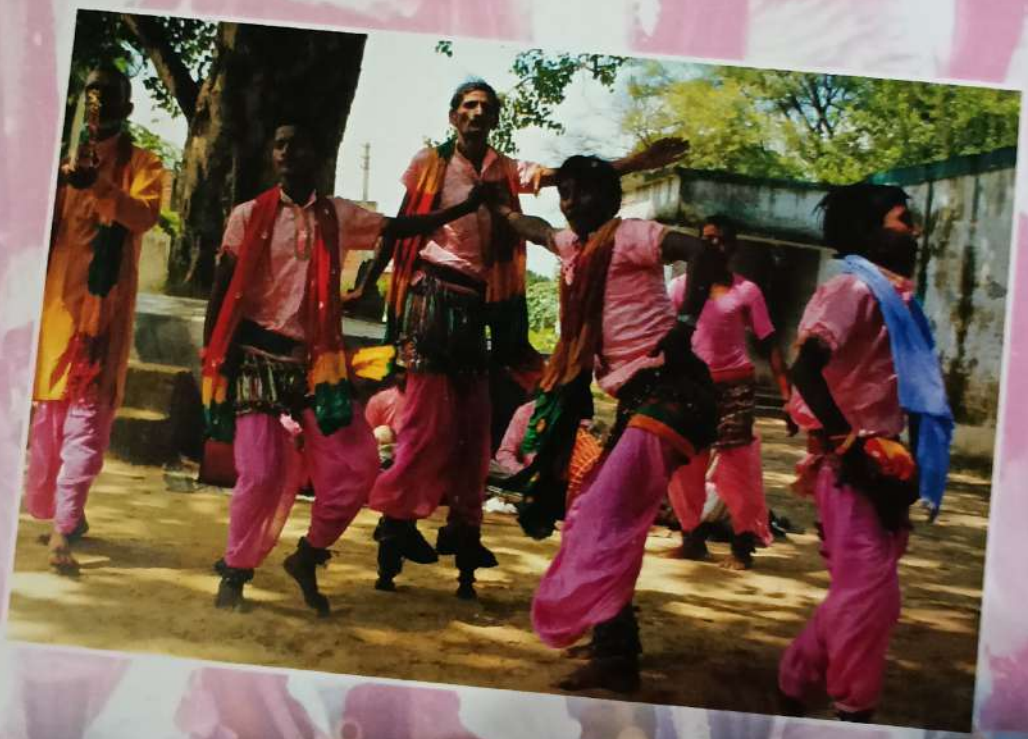

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

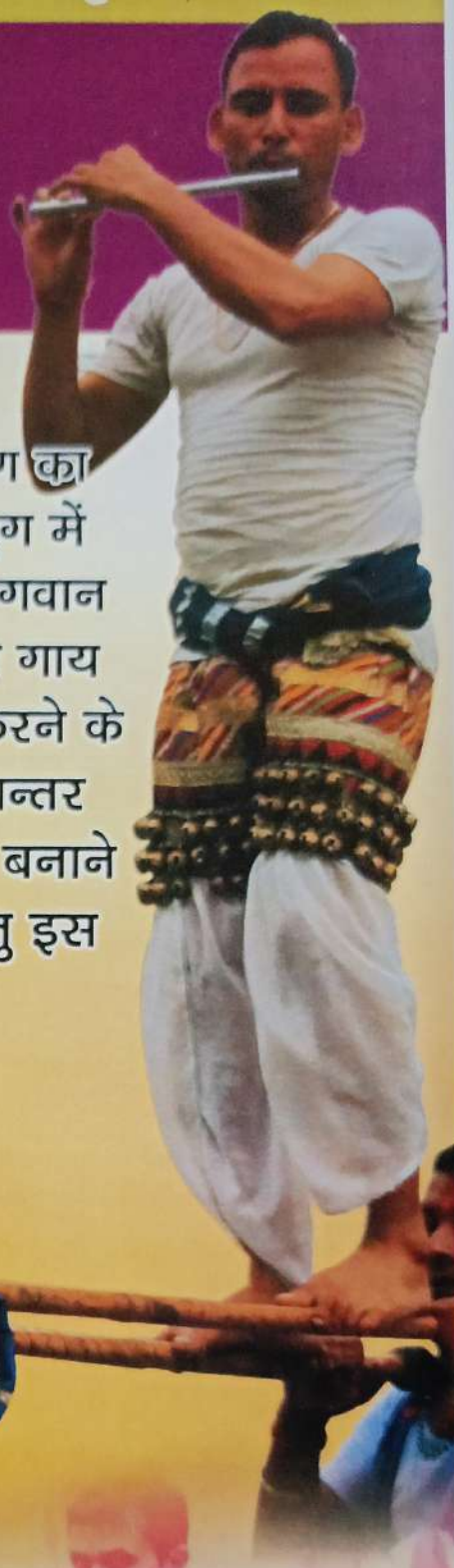

इस समुदाय के लोगों में मान्यता है कि यह भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य है। इसकी शुरुआत द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा हुई है। भगवान श्रीकृष्ण जब ग्वाल सखाओं के संग गाय चराते थे तो उस समय को व्यतीत करने के लिए और कंस की सेना के समानान्तर अपने समुदाय के लोगों को सशक्त बनाने या शारीरिक सौष्ठव प्राप्त करने हेतु इस नृत्य शैली का विकास हुआ।

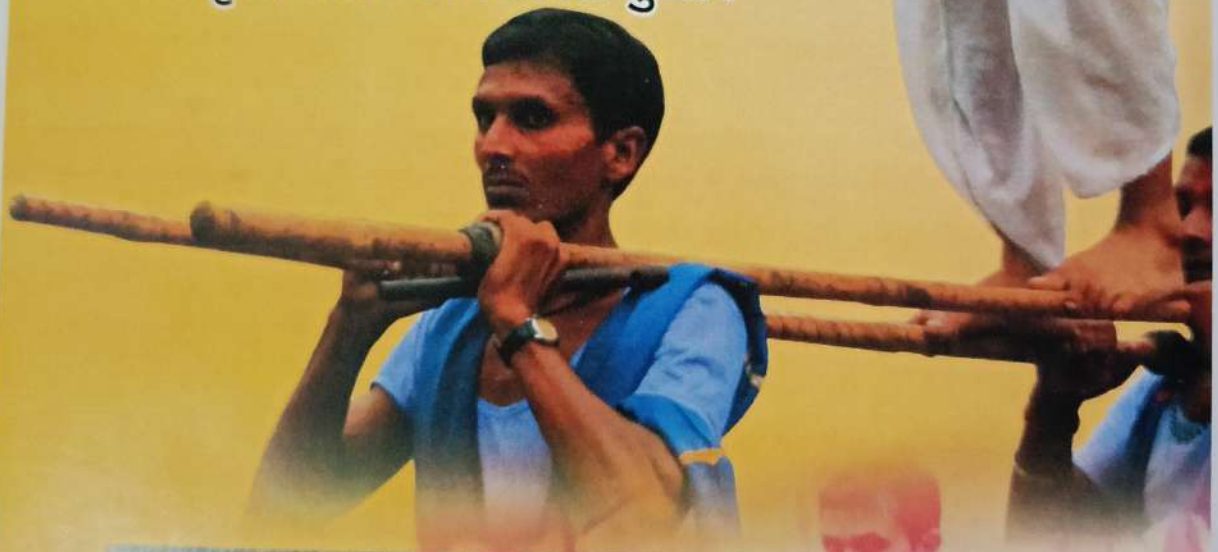

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

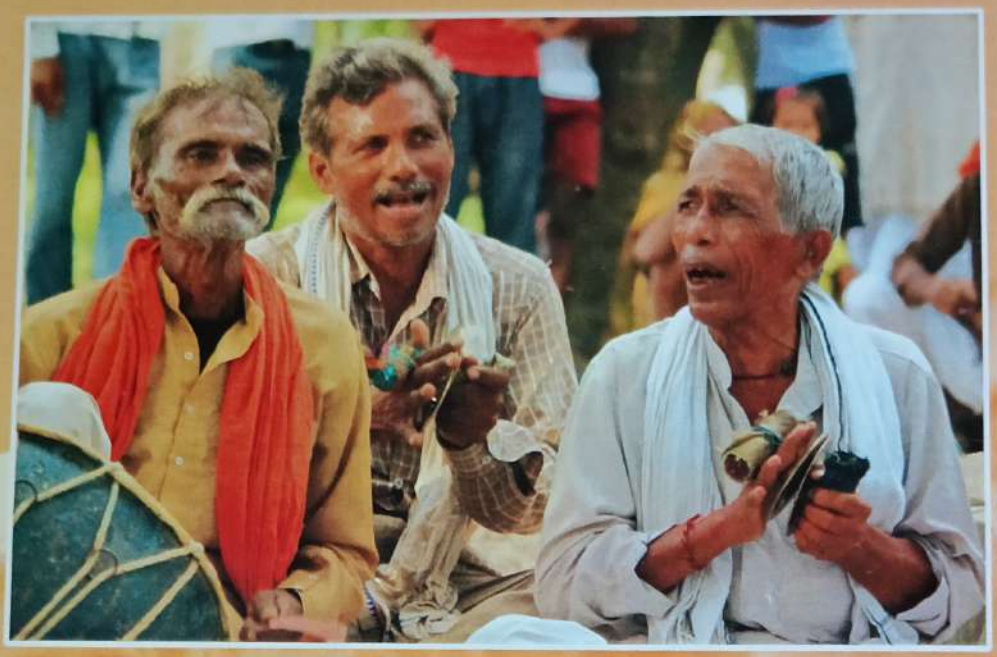

विद्वानों का मत है कि प्रारम्भ में यह सांकेतिक (मौन) नृत्य था। इसमें वाद्यों या ध्वनियों का अभाव था। यह नृत्य मौन रूप में इसलिए किया जाता था कि कंस की सेना/जासूसों को इनकी गतिविधियों के बारे में पता न चल सके। कालान्तर में धीरे-धीरे इसमें मंजीरा, नगाड़ा, घुंघरू, बांसुरी एवं अन्य वाद्य यंत्र शामिल हुए, लेकिन श्रृंगार का पुट इसमें प्रारम्भ से ही माना जाता है। गीतों का प्रयोग इसमें बहुत बाद में जुड़ा होगा।

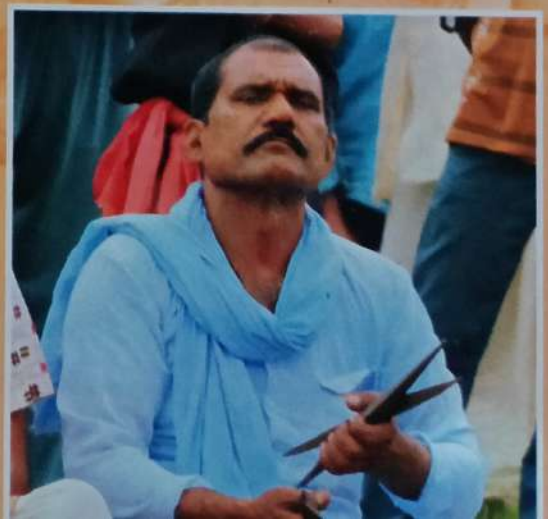

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

अभी भी इस नृत्य का प्रस्तुतिकरण केवल संगीत के साथ भी होता है। अतः इसे देखकर स्पष्ट हो जाता है कि इस नृत्य के साथ गीत प्रस्तुत नहीं किये जाते रहे होंगे। बाद में इसके प्रस्तुतिकरण में विभिन्न गीतों का समावेश कर लिया गया। विद्वानों का मत है कि इस प्रकार का बदलाव 12वीं सदी के आस-पास हुआ, जब कला संस्कृति और भाषा में लोगों ने बहुत से बदलाव कर लिये थे। इससे इसके पारम्परिक स्वरूप में विभिन्नता उत्पन्न हुई।

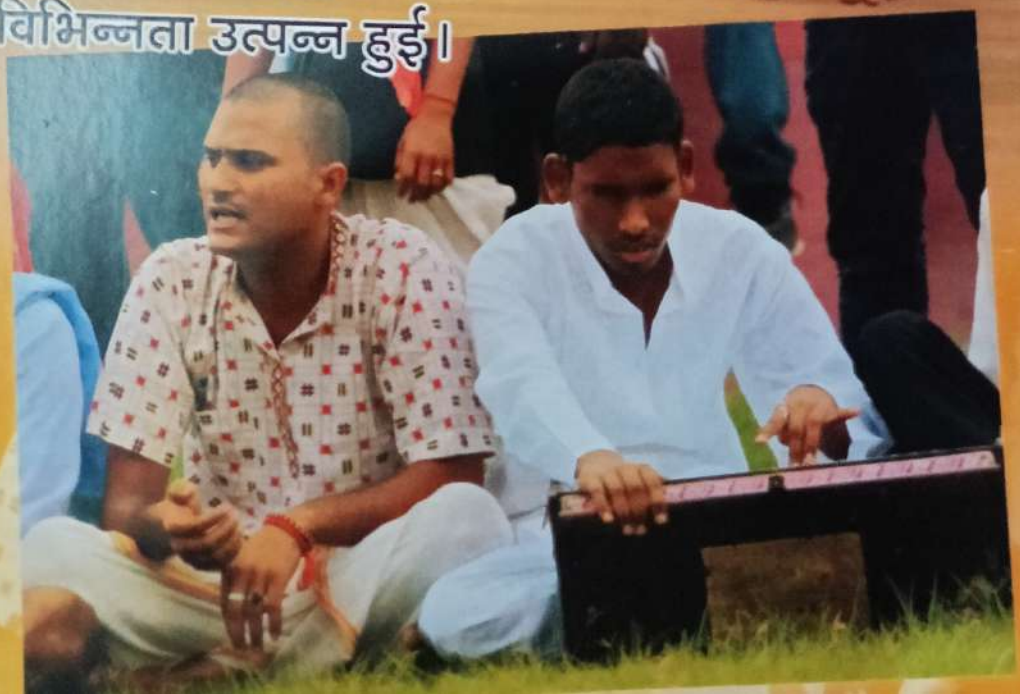

भारत की विलुप्तप्रायः लोक सांस्कृतिक विरासत

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

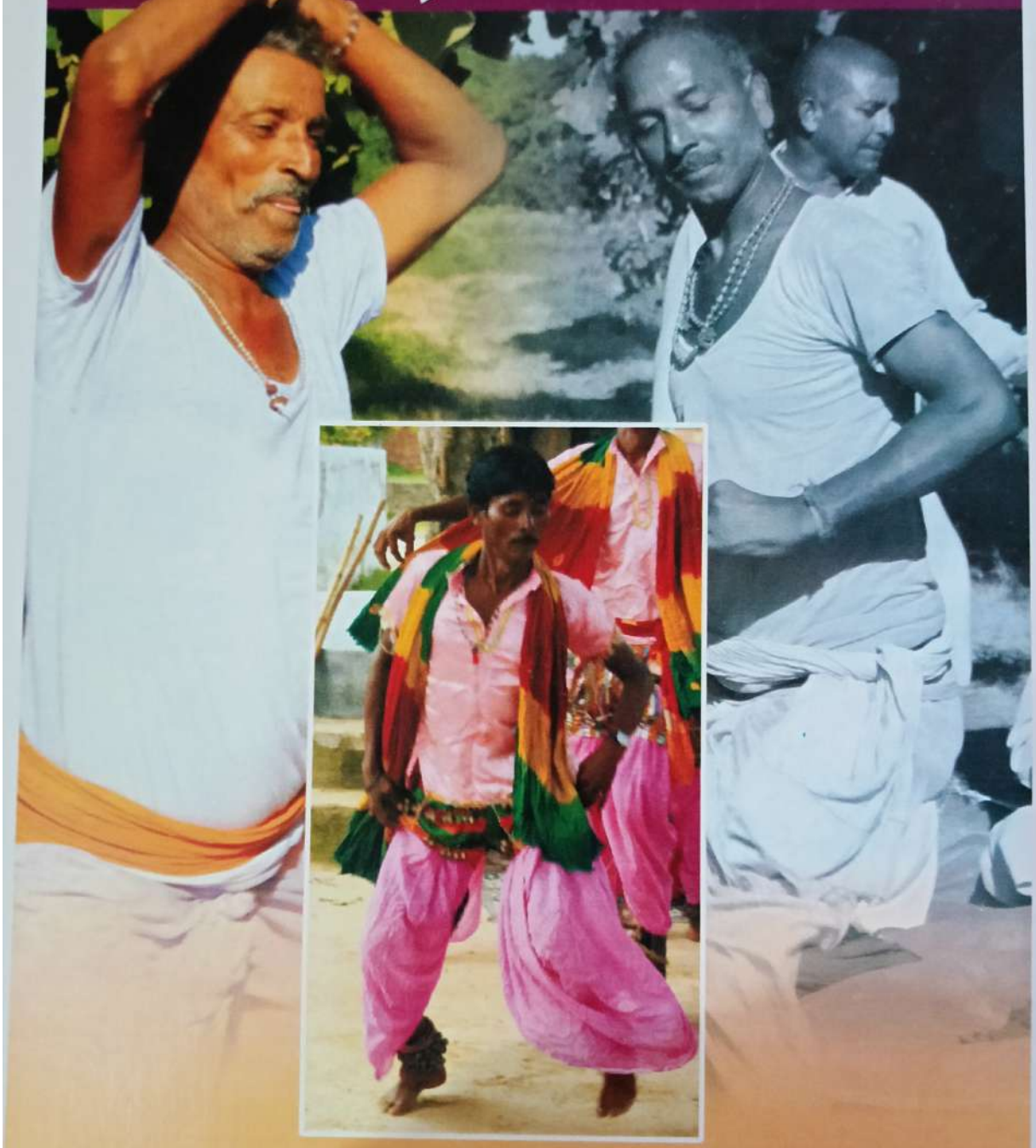

भौगोलिक भिन्नता अथवा क्षेत्रीयता के आधार पर अलग- अलग स्थानों पर इसमें थोड़ी भिन्नता भी दिखाई देती है। साथ ही इनके गीत-संगीत में क्षेत्रीयता और भाषा (स्थानीय बोली) का फर्क भी दिखता है। स्थानीयता का यही पुट नृत्य के मूवमेन्ट और वेशभूषा में भी देखने को मिलती है। वेशभूषा में कहीं घुंघरू युक्त जांघिया का प्रयोग मिलता है तो कहीं नहीं मिलता।

भारत की विलुप्तप्रायः लोक सांस्कृतिक विरासत

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

कहीं कलाकार केवल धोती गंजी पर नृत्य करते हैं तो कहीं राधा कृष्ण के प्रसंग या लीला के अभिनय को नृत्य में शामिल करते हैं। कहीं पूरी तरह से कृष्ण की तरह वस्त्र (कछनी, अंगरखा, मुरली, जांघिया) धारण करते हैं। इन सभी में घुंघरू टंके हुए जांघिया और शारीरिक सौष्ठव (मार्शल आर्ट) वाले मूवमेन्ट अधिकांशतः पाये गये हैं।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

इस प्रकार से इसकी वेशभूषा में धोती गंजी के ऊपर घुंघरू टंके हुए चुस्त जांघिया जो विभिन्न रंगों से सजा होता है तथा शरीर पर अंगरखा या दुपट्टा होता है। साथ ही कुछ कलाकार इस नृत्य को प्रस्तुत करते समय साथ-साथ बांसुरी भी बजाते हैं।

वाद्य यंत्रों के लय के साथ नर्तकों का प्रवेश होता है। इसके बाद वाद्य यंत्रों और नृत्य की गति तीव्र हो जाती है। इसके बाद मुख्य गायक गायन शुरू करता है। गायन का मुख्य विषय भगवान कृष्ण के जीवन से जुड़े प्रसंगो का वर्णन है। गायन के उपरान्त नर्तक अभिनय करता हुआ नृत्य करता है।

जांघिया / फरूवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

लोक परम्पराओं के अन्य नृत्यों की तरह ही इसका मनुष्य के जीवन के साथ नजदीक का सम्बन्ध है। आज के तेजी से बदल रहे सामाजिक परिवेश में अस्तित्व के संकट से जूझते हुए ये अपनी पहचान बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील है।

जांघिया नृत्य का कोई लिखित साहित्य या पुस्तक नहीं है। यह मौखिक रूप से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में जाता रहा है। इसके वाद्य यन्त्र, गायकी और नृत्य को देखकर ही बच्चों के मन पर इसके संस्कार पड़ते जाते थे और वे सहजता से इसे आत्मसात कर लेते थे। इस जाति के पारिवारिक समारोहों में किया जाने वाला जांघिया नृत्य बदलते परिवेश में पीछे छूटा जा रहा है।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

जांघिया / फरुवाही नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

बदलते परिवेश में सामाजिक ताना-बाना इस कदर बदल गया है कि जांघिया नृत्य जैसे पारम्परिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है। एक तरफ पूर्व की पीढ़ी के आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट दिखाई दे रही है। तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ो को इसे अपनाने के लिए जोर नहीं देना चाहते। धन प्रधान समाज में ये पारम्परिक सन्दर्भो में अपने दायित्व से विमुख होने के लिए मजबूर हैं। विकल्प केवल यही शेष है कि इस 'ज्ञान' को इसके पारम्परिक विद्यालय में ही समय रहते सवाँर लिया जाय और इस हुनर की निरन्तरता बनायी रखी जाए।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

कहरउवा नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

कहरउवा नृत्य भोजपुरी क्षेत्र के लोक नृत्य परम्परा में सांस्कृतिक जीवन की एक लोक परम्परा है जो लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ये ग्रामीणों के जीवन में उल्लास भरने का काम करते हैं।

अपने नाम के अनुरूप ''कहरउवा नृत्य'' कहांर और गोंड़ जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।

कहरउवा नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला

इस जाति के लोग अशिक्षित थे। अतः जाति समुदाय के लोग काम काज परिश्रम आदि से जब फुर्सत पाते थे तो लोकरंजन के लिए इस नृत्य का विकास हुआ, जिसे इन जातियों ने अपने जातिय रीति-रिवाज, संस्कार एवं उत्सव आदि में करने लगे। इस परम्परा की पहचान मौखिक ही है।

स्थानीय सूत्रों से इस परम्परा की पहचान और स्थानीय नागरिकों में इसका चलन है जो सामाजिक सहचर्य कायम करने में ये अपनी भूमिका निभाती है। स्थानीय भाषाओं में गाये जाने वाले इसके गीत अपने परिवेश और सामाजिक ढ़ांचे के ताने-बाने को बखूबी बयां करते हैं। नृत्य में इनके जातिगत रूप से किये जाने वाले कार्य की छाप दिखाई देती है।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

कहरउवा नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

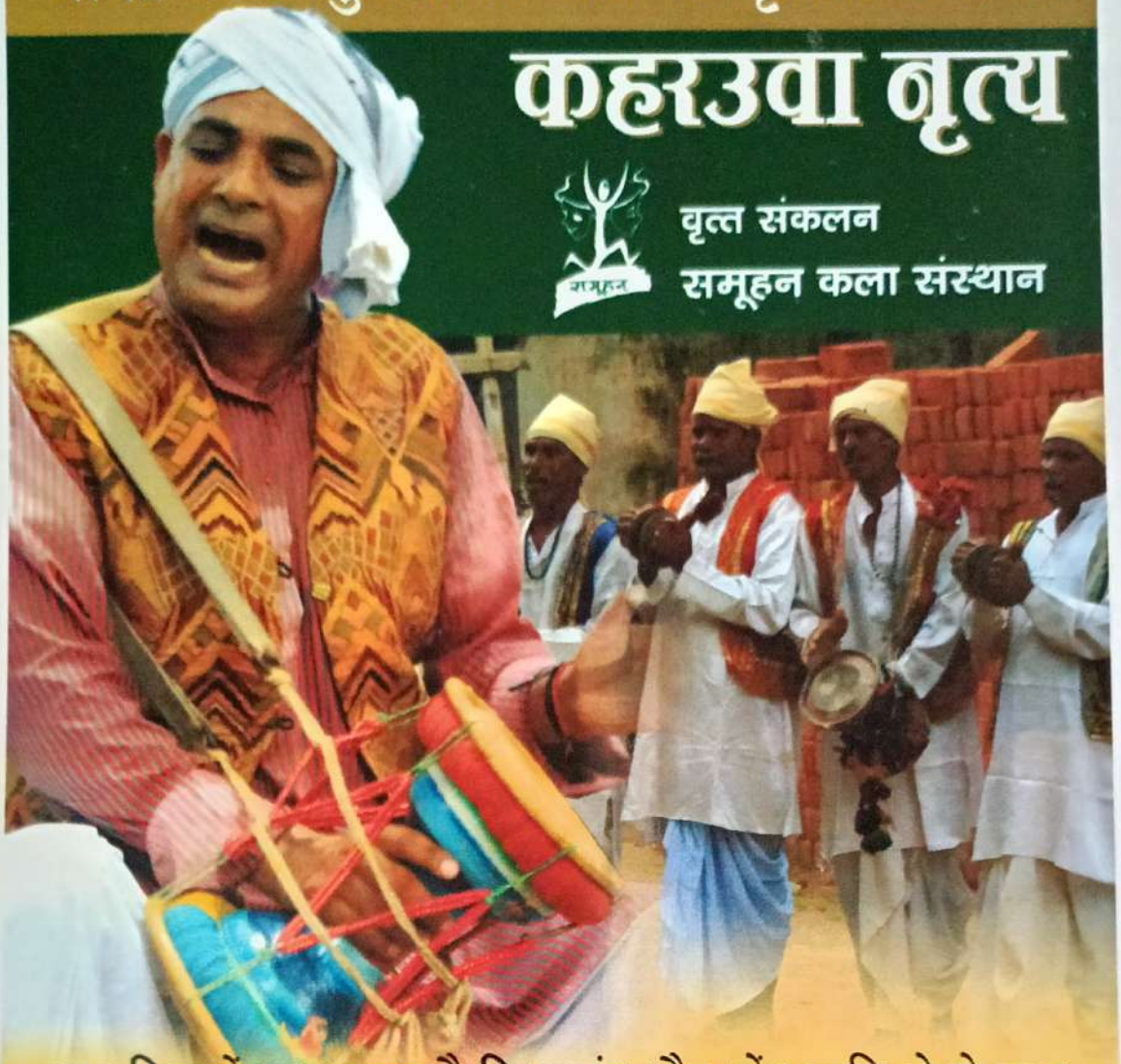

कुछ विद्वानों का मानना है कि कहांर और गोंड़ जाति के ये नृत्य दो अलग-अलग शाखाएं हैं। मगर इसमें पर्याप्त समानताएं देखने को मिल रही हैं। इस पारम्परिक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले वाद्य में 'हुड़का' ही प्रमुख वाद्य है, जो कहांर और गोंड़ जाति दोनों में एक समान है। इस परम्परा के लोग इस नृत्य का उद्भव भगवान शंकर से मानते हैं क्योंकि हुड़का हुबहू डमरू जैसा ही डमरू से बड़े आकार का एक वाद्य है जो सिहोर की लकड़ी से बना होता हैं, जिस पर चमड़ा रस्सी के सहारे मढ़ा होता है और रस्सी के खिंचाव से इसकी आवाज भी बदलती है। इस परम्परा के लोग मानते हैं कि शंकर जी के डमरू बजाने से जिस महेश्वर सूत्र की उत्पत्ति हुई है, वहीं से इस हुड़का की उत्पत्ति हुई है।

कहरउवा नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

इस नृत्य में हुड़का के अतिरिक्त ढ़ोलक, झाल (मजीरा) आदि वाद्य भी बजाये जाते हैं। नृत्य में पुरूष ही स्त्री का वेश धरते हैं और एक विदुशक पात्र भी होता है जिसे लबार कहते हैं। इनके गीतों में समाज की कुरीतियों, विसंगतियों, शोषण आदि पर व्यंग्य भी होता है और अपनी पीड़ा का स्वतःस्फूर्त, इजहार भी है। इनके गीतों में देवी-देवता की स्तुति आदि भी होती है। ऐसी मान्यता है कि उच्च जाति के लोग पुत्र प्राप्ति की कामना से मनौती मानते थे और गंगा किनारे मां आंचल फैलाती थी और उसपर ये लोग नृत्य करते हैं। तभी मनौती पूरी मानी जाती है। इस प्रकार से यह नृत्य सामाजिक एकीकरण के सूत्र के रूप में देखी जा सकती है। इस अशिक्षित समाज इनकी यह परम्परा केवल वाचिक रूप में ही है।

भारत की विलुप्तप्राय: लोक सांस्कृतिक विरासत

कहरउवा नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

वर्तमान में इस जातिये समुदाय के कुछ सीमित लोग ही अपनी इस पारम्परिक विधा को आंशिक रूप से अपनाये हुए हैं क्योंकि वो सामाजिक बदलाव के साथ-साथ सामंजस्य का अभाव महसूस कर रहे हैं और उपेक्षित जीवन जी रहे हैं। अपनी पारम्परिक नृत्य के प्रति उन्हें सम्मान और रोजी-रोटी का अभाव जान पड़ता है। अतः इसे बचाने के लिए इनकी सुरक्षा और हित का माहौल पैदा करना होगा।

कहरउवा नृत्य

वृत्त संकलन
समूहन कला संस्थान

यह लोक नृत्य वर्तमान में समाज में आंशिक रूप से ही सुरक्षित है क्योंकि बदलते समय के हिसाब से ये अपने को पिछड़ा महसूस करते हैं और रोजी-रोटी के लिए अन्य पेशे की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। एक तरफ पारिवारिक पेशा ही समाप्त हो रहा है तो दूसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के उच्च वर्ग द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने या आत्म सम्मान न पा पाने के कारण इससे दूर हो रहे हैं और अगली पीढ़ी को पर्याप्त रूप से इसके लिए प्रमोट नहीं कर रहे हैं। समाज को इस बात के लिए जागरूक होना चाहिए कि अपनी लोक परम्पराओं और विधाओं को जीवित रखकर ही अपने अतीत को जीवित रख सकते

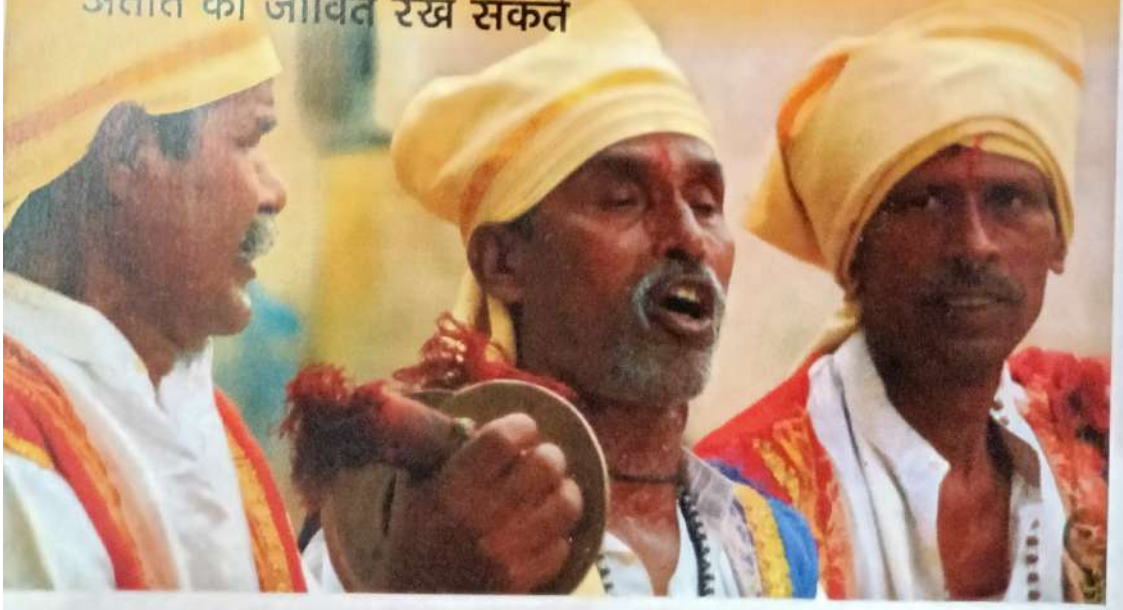

समूहन
कला संस्थान

द्वारा आयोजित

महक माटी की

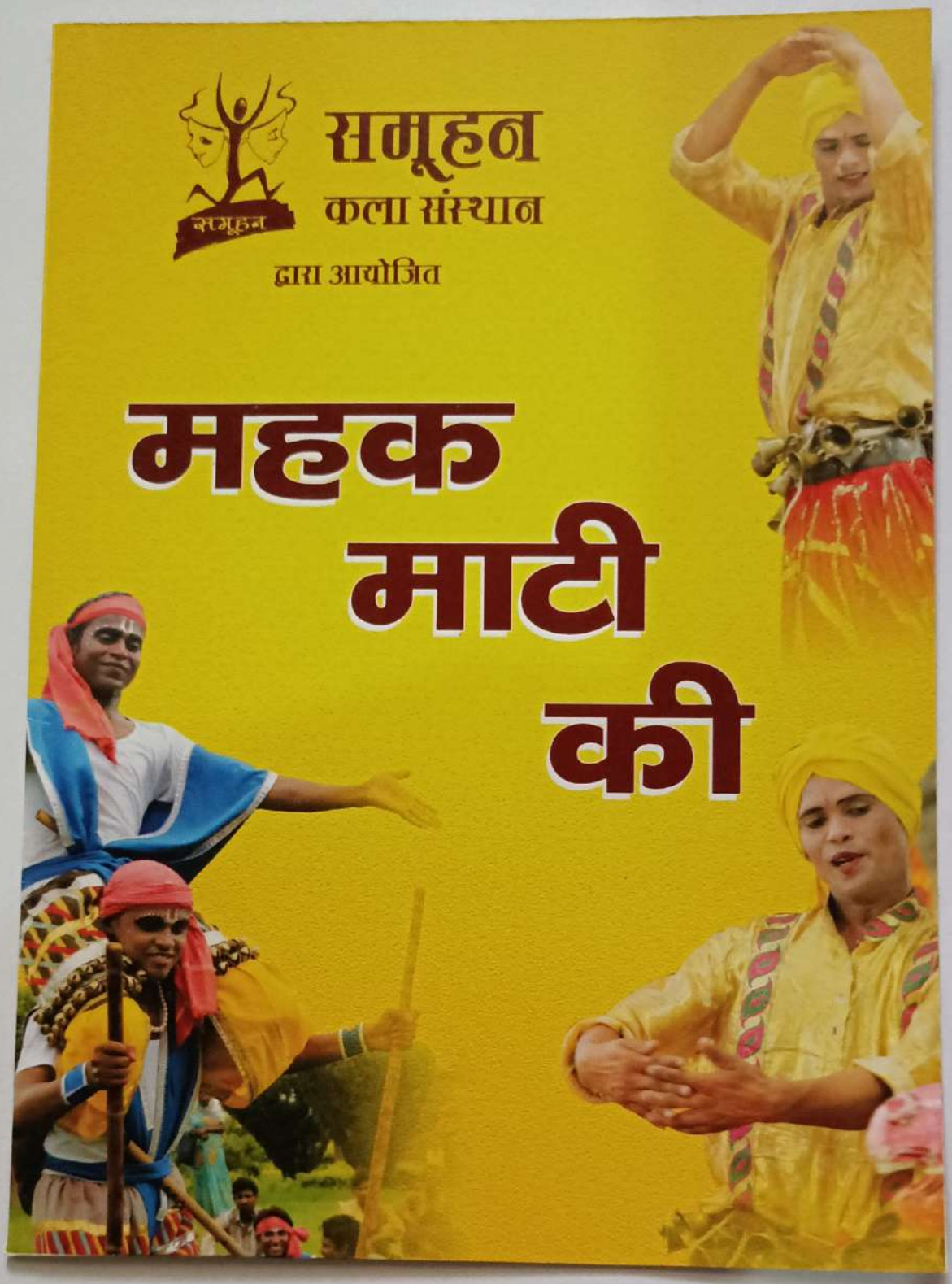

संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार)
के आई० सी० एच० योजना के अर्न्तगत
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के माध्यम से
प्राप्त सहयोग के क्रम मे

समूहन कला संस्थान
द्वारा आयोजित

महक माटी की

विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति

घोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य के चित्रो की प्रदर्शनी

एवं इन लोक एवं नृत्यों के प्रस्तुतिपरक प्रदर्शन

के अवलोकनार्थ
आप सादर आमंत्रित हैं।

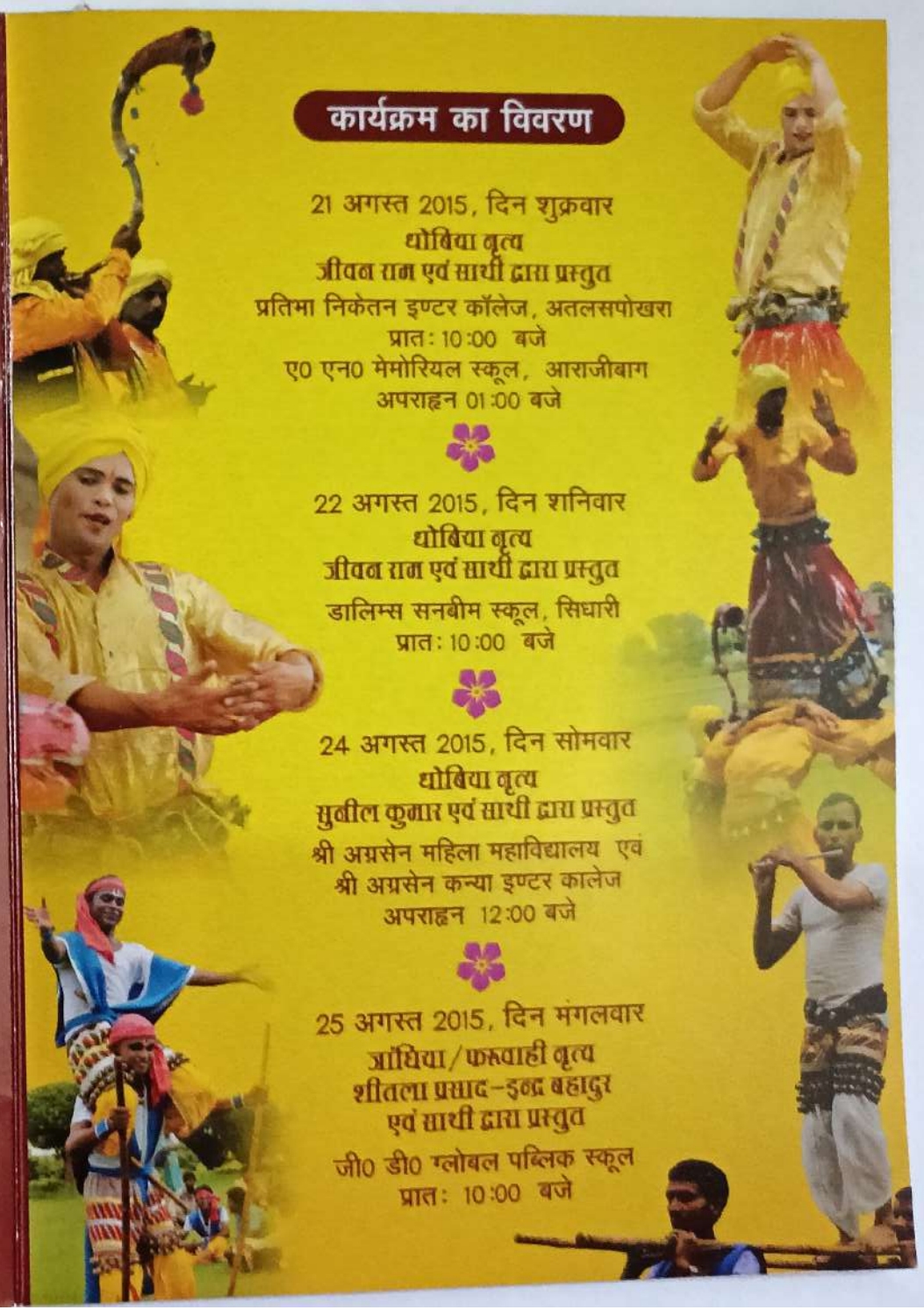

कार्यक्रम का विवरण

21 अगस्त 2015, दिन शुक्रवार
घोबिया नृत्य
जीवन राम एवं साथी द्वारा प्रस्तुत
प्रतिभा निकेतन इण्टर कॉलेज, अतलसपोखरा
प्रात: 10:00 बजे
ए० एन० मेमोरियल स्कूल, आराजीबाग
अपराह्न 01:00 बजे

22 अगस्त 2015, दिन शनिवार
घोबिया नृत्य
जीवन राम एवं साथी द्वारा प्रस्तुत
डालिम्स सनबीम स्कूल, सिधारी
प्रात: 10:00 बजे

24 अगस्त 2015, दिन सोमवार
घोबिया नृत्य
सुशील कुमार एवं साथी द्वारा प्रस्तुत
श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय एवं
श्री अग्रसेन कन्या इण्टर कालेज
अपराह्न 12:00 बजे

25 अगस्त 2015, दिन मंगलवार
जाँघिया/कहरवाही नृत्य
शीतला प्रसाद-इन्द्र बहादुर
एवं साथी द्वारा प्रस्तुत
जी० डी० ग्लोबल पब्लिक स्कूल
प्रात: 10:00 बजे

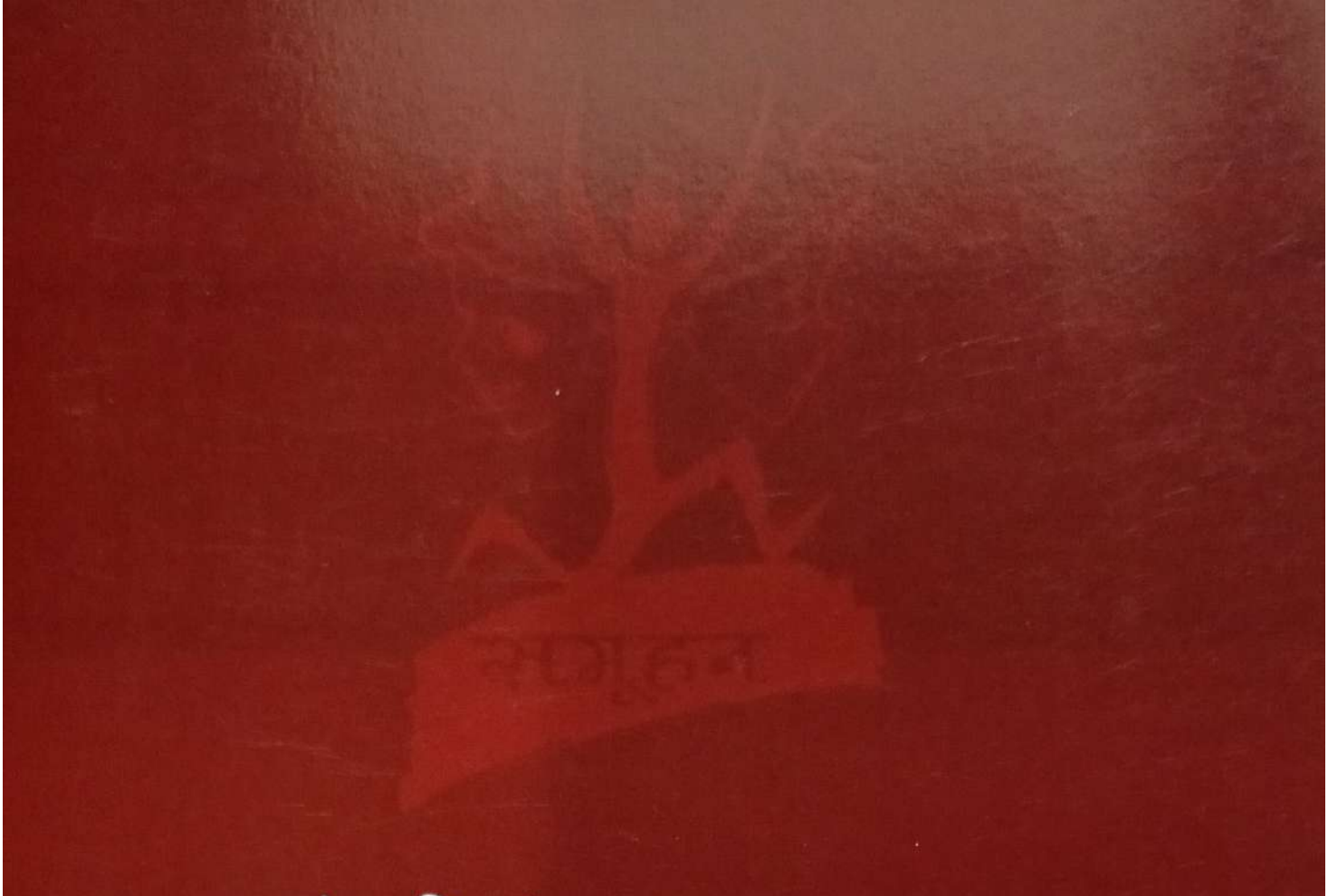

संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार)
के आई0 सी0 एच0 योजना के अर्न्तगत
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के माध्यम से
प्राप्त सहयोग के क्रम मे आयोजित

सम्पर्क
समूहन कला संस्थान
एफ 6 के सामने, रैदोपुर कॉलोनी
आज़मगढ़-276001
दूरभाष - 09451565397

कहरउवा नृत्य भोजपुरी क्षेत्र की एक लोक परम्परा है। अपने नाम के अनुरूप ''कहरउवा नृत्य'' कहार और गोंड़ जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है।

इस जाति के लोग अशिक्षित थे। अतः जाति समुदाय के लोग काम काज परिश्रम आदि से जब फुर्सत पाते थे तो लोकरंजन के लिए इस नृत्य का विकास हुआ, जिसे इन जातियों ने अपने जातीय रीति–रिवाज, संस्कार एवं उत्सव आदि में करने लगे। कुछ विद्वानों का मानना है कि कहार और गोंड़ जाति के ये नृत्य दो अलग–अलग शाखाएं हैं। मगर इसमें पर्याप्त समानताएं देखने को मिल रही हैं। इस पारम्परिक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले वाद्य में 'हुड़का' ही प्रमुख वाद्य है, जो कहार और गोंड़ जाति दोनों में एक समान है। इस परम्परा के लोग इस नृत्य का उद्भव भगवान शंकर से मानते हैं क्योंकि हुड़का हुबहू डमरू जैसा ही डमरू से बड़े आकार का एक वाद्य है जो सिहोर की लकड़ी से बना होता हैं, जिस पर चमड़ा रस्सी के सहारे मढ़ा होता है और रस्सी के खिंचाव से इसकी आवाज भी बदलती है। इस परम्परा के लोग मानते हैं कि शंकर जी के डमरू बजाने से जिस महेश्वर सूत्र की उत्पत्ति हुई है, वहीं से इस हुड़का की उत्पत्ति हुई है।

इस नृत्य में हुड़का के अतिरिक्त ढ़ोलक, झाल (मजीरा) आदि वाद्य भी बजाये जाते हैं। नृत्य में पुरूष ही स्त्री का वेष धरते हैं और एक विदुषक पात्र भी

कुरीतियों, विसंगतियों, शोषण आदि पर व्यंग्य भी होता है और अपनी पीड़ा का स्वतः स्फूर्त, इजहार भी है। इनके गीतों में देवी–देवता की स्तुति आदि भी होती है। ऐसी मान्यता है कि उच्च जाति के लोग पुत्र प्राप्ति की कामना से मनौती मानते थे और गंगा किनारे मां आंचल फैलाती थी और उसपर ये लोग नृत्य करते हैं। तभी मनौती पूरी मानी जाती है। इस प्रकार से यह नृत्य सामाजिक एकीकरण के सूत्र के रूप में देखी जा सकती है। इस अशिक्षित समाज इनकी यह परम्परा केवल वाचिक रूप में ही है।

यह लोक नृत्य वर्तमान में समाज में आंशिक रूप से ही सुरक्षित है क्योंकि बदलते समय के हिसाब से ये अपने को पिछड़ा महसूस करते हैं और रोजी–रोटी के लिए अन्य पेशे की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। एक तरफ पारिवारिक पेशा ही समाप्त हो रहा है तो दूसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के उच्च वर्ग द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने या आत्म सम्मान न पा पाने के कारण इससे दूर हो रहे हैं और अगली पीढ़ी को पर्याप्त रूप से इसके लिए प्रमोट नहीं कर रहे हैं। समाज को इस बात के लिए जागरूक होना चाहिए कि अपनी लोक परम्पराओं और विधाओं को जीवित रखकर ही अपने अतीत को जीवित रख सकते

संस्कृति मंत्रालय (भारत सरकार)
के आई० सी० एच० योजना के अर्न्तगत
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली के माध्यम से
प्राप्त सहयोग के क्रम मे आयोजित

सम्पर्क
समूहन कला संस्थान

समूहन कला संस्थान

द्वारा आयोजित

महक माटी की

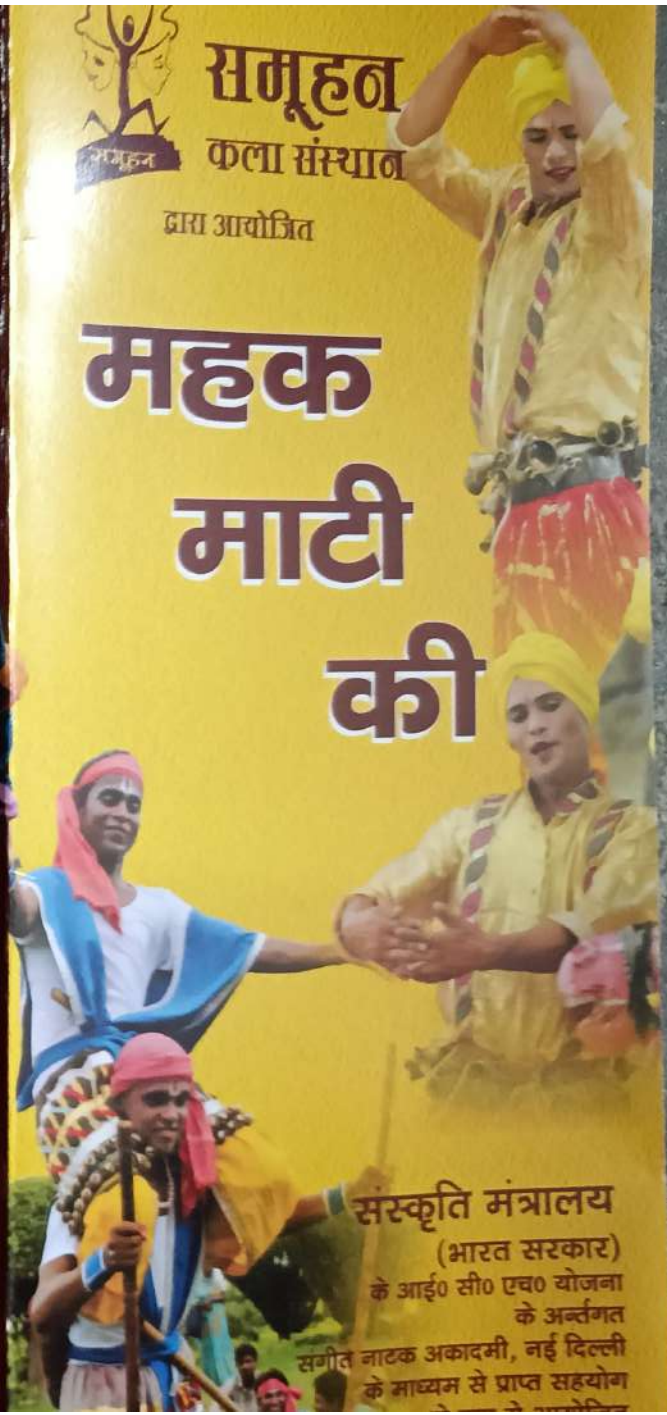

संस्कृति मंत्रालय
(भारत सरकार)
के आई० सी० एच० योजना
के अर्न्तगत
संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली
के माध्यम से प्राप्त सहयोग

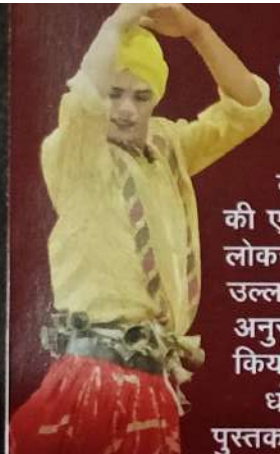

धोबिया नृत्य

धोबिया नृत्य भोजपुरी क्षेत्र के लोक नृत्य परम्परा में सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्त रस धारा है। लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ये ग्रामीणों के जीवन में उल्लास भरने का काम करते हैं। अपने नाम के अनुरूप ''धोबिया नृत्य'' धोबी जाति द्वारा किया जाने वाला लोक नृत्य है।

धोबिया नृत्य का कोई लिखित साहित्य या पुस्तक नहीं है। यह मौखिक रूप से एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी में जाता रहा है। धोबिया नृत्य की परम्परायें सभी क्षेत्रों में मौखिक ही है। धोबी समुदाय के अनपढ़ लोग ही इस परम्परा के वाहक हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस नृत्य को आगे ले जाते हैं। इनके नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अन्तरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती हैं और यही धोबिया नृत्य की प्रमुख विशेषता है। यह नृत्य जाति विशेष के शुभ व मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। इस नृत्य में लगभग 10 से 15 कलाकार होते हैं, जिनमें से कुछ लोग वाद्य बजाते हैं और कुछ नृत्य करते हैं।

धोबिया नृत्य में घाघरा, पैजामा, पगड़ी आदि परिधानों का इस्तेमाल होता है। इस नृत्य में परम्परागत वेशभूषा कुर्ता, पैजामा, पगड़ी और नर्तक वृन्द सिर पर पगड़ी के साथ शरीर पर एक कुर्तीनुमा वस्त्र और घाघरा पहनते हैं, जिसमें कमर पर एक चौड़ी पट्टी में बहुत सारी घण्टियां लगी होती हैं, जिसे कमर को आगे–पीछे लचकदार झटके के साथ नृत्य किया जाता है। नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वाद्य यन्त्रों के साथ संगत पूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है जो विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं। वाद्य यन्त्रों में पखावज, कसावर, डेढ़ताल, मजीरा, घण्टी, रणसिंहा का प्रयोग होता है।

इनके गीतों में कुछ पौराणिक उपाख्यान और देवी देवताओं का स्तुति वन्दन आदि भी होता है। इसके अलावा गायन में सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक कुरीतियों को भी रोचक ढ़ंग से गाया जाता है। प्रकृति ही उनकी गुरू होती है। जिसके आंचल में बैठकर इन लोक कलाओं की ककहरी बनती है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, वृक्ष वनस्पतियों, जीवो, पशुओं का जिक्र इनके गीतों में होता है।

इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है। बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बदल गया है कि धोबिया नृत्य जैसे पारम्परिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है।

जांघिया / फरूवाही नृत्य

जांघिया अथवा जांगिया नृत्य विशेषतः यादव (अहीर) समुदाय का जातिय नृत्य है, इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में इसे फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक के कूद कर नाचने और तरह–तरह के करतब दिखाने को इस नृत्य में शामिल करने के कारण, जिसे स्थानीय भाषा में फर्री कहा जाता है, इसे फरूवाही नृत्य कहा जाता है। नृत्य की वेशभूषा में एक विशेष प्रकार का जांघिया, जिस पर घुंघरू टंके होते हैं, के कारण इसका नाम जांघिया नृत्य प्रचलित हुआ है। यह नृत्य भोजपुरी भाषी इलाकों, पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के यादव समुदाय में पाया जाता है।

इस समुदाय के लोगों में मान्यता है कि यह भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य है। इसकी शुरूआत द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा हुई है। भगवान श्रीकृष्ण जब ग्वाल सखाओं के संग गाय चराते थे तो उस समय को व्यतीत करने के लिए और कंस की सेना के समानान्तर अपने समुदाय के लोगों को सशक्त बनाने या शारीरिक सौष्ठव प्राप्त करने हेतु इस नृत्य शैली का विकास हुआ।

भौगोलिक भिन्नता अथवा क्षेत्रीयता के आधार पर अलग–अलग स्थानों पर इसमें थोड़ी भिन्नता भी दिखाई देती है। साथ ही इनके गीत–संगीत में क्षेत्रीयता और भाषा (स्थानीय बोली) का फर्क भी दिखता है। स्थानीयता का यही पुट नृत्य के मूवमेन्ट और वेशभूषा में भी देखने को मिलती है। वेशभूषा में कहीं घुंघरू युक्त जांघिया का प्रयोग मिलता है तो कहीं नहीं मिलता। कहीं कलाकार केवल धोती गंजी पर नृत्य करते हैं तो कहीं राधा कृष्ण के प्रसंग या लीला के अभिनय को नृत्य में शामिल करते हैं। कहीं पूरी तरह से कृष्ण की तरह वस्त्र (कछनी, अंगरखा, मुरली, जांघिया) धारण करते हैं। इन सभी में घुंघरू टंके हुए जांघिया और शारीरिक सौष्ठव (मार्शल आर्ट) वाले मूवमेन्ट अधिकांशतः पाये गये हैं।

नृत्य के दौरान नर्तक शारीरिक सौष्ठव का प्रदर्शन भी करते हैं। लाठियों के सहारे तरह–तरह के करतब नृत्य के समय किया जाता है। लाठी के उपर चढना, उसको भांजना, कांधे पर लाठी रखकर उस पर दूसरे नर्तक का चढकर बांसुरी बजाना, नृत्य करना इत्यादि भी शामिल होता है। एक प्रकार से यह शारीरिक करतब का प्रदर्शन भी है। इसमें प्रयुक्त वाद्यों में ढ़ोलक, नगाड़ा, टिमकी, करताल अर्थात फार (बैलों के हल में लोहे का फार प्रयुक्त होता है) आदि मुख्य है।

बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बदल गया है कि जांघिया नृत्य जैसे पारम्परिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गयी है। इससे भारत की परम्परागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है। एक तरफ पूर्व की पीढ़ी के आंखों में अपनी लोक परम्परा को खो देने की पीड़ा स्पष्ट दिखाई दे रही है। तो दूसरी तरफ पेट के लिए अगली पीढ़ी को इसे अपनाने के लिए जोर नहीं देना चाहते। धन प्रधान समाज में ये पारम्परिक सन्दर्भों में अपने दायित्व से विमुख होने के लिए मजबूर हैं। विकल्प केवल यही शेष है कि इस 'ज्ञान' को इसके पारम्परिक विद्यालय में ही समय रहते सवांर लिया जाय और इस हुनर की निरन्तरता बनायी रखी जाए।

मन को लुभा गया धोबिया नृत्य

- तीनों नृत्यों की प्रदर्शनी का लोगों ने उठाया भरपूर लुत्फ

आजमगढ़ः प्रतिभा निकेतन इंटर कालेज व एएन मेमोरियल स्कूल में शुक्रवार को तीनों नृत्यों की प्रदर्शनी एवं धोबिया नृत्य की शानदार प्रस्तुति ने समां बांध दिया। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कला का यह आलम उफान पर था। इसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं शामिल हुईं और इन विधाओं के बारे में जाना।

प्रतिभा निकेतन स्कूल में धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

प्रतिभा निकेतन में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते बच्चे।

कला व संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी संस्था समूहन कला संस्थान एवं विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति के संवर्धन, संचरण, संरक्षण एवं प्रसार के उद्देश्य से जनपद के विभिन्न विद्यालयों में किशोर, युवा, छात्र-छात्राओं के लिए अपनी लोक संस्कृति को जाने पहचाने कार्यक्रम आयोजित की गई। पहली श्रृंखला महक माटी की प्रस्तुत की। इसमें उत्तर प्रदेश की विलुप्त लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एवं जांधिया नृत्य का प्रदर्शन एवं इन विधाओं की चित्र प्रदर्शनी को शामिल किया गया है।

कार्यक्रम का शुभारंभ संजीव पांडेय, दिनेश सिंह सैनी, रमाकांत वर्मा, ध्रुवचंद मौर्य व दीनानाथ लाल श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन करके किया। कार्यक्रम का प्रबंधन अजय उपाध्याय व संचालन संजीव पांडेय ने किया। इस अवसर पर छात्र-छात्राओं ने धोबिया, कहरउवा व जांधिया नृत्य पर लगाई गई एक आकर्षक चित्र प्रदर्शनी को देख कर कई जानकारियां प्राप्त की। संस्था के निदेशक राजकुमार शाह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कहा कि बदलते परिवेश में सामाजिक ताना-बाना इस कदर बदल गया है कि धोबिया नृत्य जैसे पारंपरिक लोक नृत्यों की कद्र समाप्त हो गई है। इससे भारत की परंपरागत लोक संस्कृति को भी क्षति पहुंची है। वर्तमान में इस जातीय समुदाय के कुछ सीमित लोग ही अपनी इस पारंपरिक विधा को आंशिक रूप से अपनाए हुए हैं क्योंकि वह सामाजिक बदलाव के साथ-साथ सामंजस्य का अभाव महसूस कर रहे हैं और उपेक्षित जीवन जी रहे हैं।

जनसंदेश टाइम्स

शनिवार, 22 अगस्त, 2015

लोक संस्कृति के संवर्धन को हुए भव्य कार्यक्रम

आजमगढ़। कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी संस्था समूहन कला संस्थान द्वारा विलुप्त प्राय लोक संस्कृति के संवर्धन, संचरण, संरक्षण एवं प्रसार के उद्देश्य से जनपद के विभिन्न विद्यालयों में किशोर युवा छात्र, छात्राओं के लिए अपनी लोक संस्कृति को जाने पहचाने कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहली श्रृंखला महक माटी की प्रस्तुति हुई जिसमें उत्तर प्रदेश की विलुप्तप्राय लोक संस्कृति धोबिया, कहरवा एवं जांघिया नृत्य का प्रदर्शन एवं इन विधाओं की चित्र प्रदर्शनी को शामिल किया गया। कार्यक्रम के पहले दिन शुक्रवार को प्रतिभा निकेतन इंटर कालेज एवं एएन मेमोरियल स्कूल में उक्त तीनों नृत्यों की प्रदर्शनी एवं धोबिया नृत्य की प्रस्तुति की गयी।

कार्यक्रम का शुभारंभ संजीव पांडेय, दिनेश सिंह सैनी, रमाकांत वर्मा, ध्रुवचंद मौर्य एवं दीनानाथ लाल श्रीवास्तव ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्जवलित कर किया। वक्ताओं ने कहा कि धोबिया नृत्य खांटी लोक में जन्मा एक पारंपरिक प्रदर्शनकारी कला है जो लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ग्रामीणों के जीवन में उल्लास भरने का काम करती है। धोबिया नृत्य की परम्पराएं सभी क्षेत्रों में मौखिक ही हैं इनका कोई लिखित रुप में नहीं मिलता है। धोबी समाज के अशिक्षित या अल्प शिक्षित लोग ही इस परं के वाहक हैं।

जीवन राम एवं दल के साथियं पारंपरिक धोबिया नृत्य की प्रस्तुति बच्चों ने उक्त नृत्य की बारीकियों जानकारी ली। कार्यक्रम का प्रबं अजय उपाध्याय तथा संचालन संज पांडेय ने किया।

प्रतिभा निकेतन स्कूल में जानकारी लेते स्कूली बच्चे

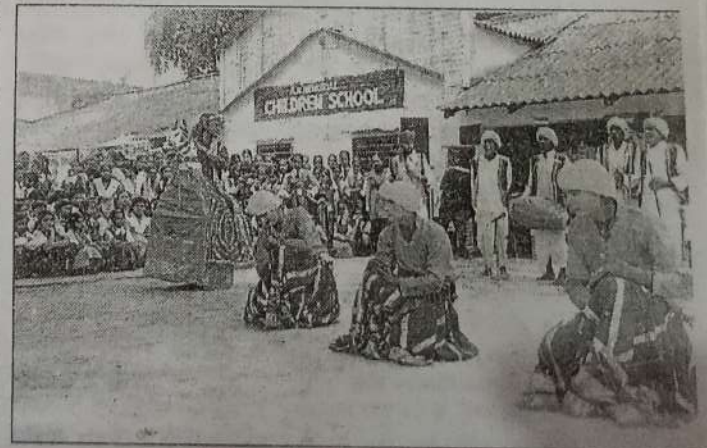

एएन मेमोरियल स्कूल में धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार

अपनी लोक संस्कृति जाने पहचाने का हुआ आंयोजन

आजमगढ। कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी संस्था समूहन कला संस्थान द्वारा विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति के संवर्धन, संचरण, संरक्षण एवंप्रसार के उद्देश्य सेजनपद के विभिन्न विद्यालयों में किशोर–युवा छात्र–छात्राओं के लिए ' अपनी लोक संस्कृति को जाने पहचानें' कार्यक्रम आयोजित की गई। पहली श्रृंखला "महक माटी की" प्रस्तुत हुई, जिसमे उ0 प्र0 की विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति ध ोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य का प्रदर्शन एवं इन विध ाओं की चित्र प्रदर्शनी को शामिल किया गया है। कार्यक्रम के पहले दिन प्रतिभा निकेतन इण्टर कॉलेज एवं ए0 एन0 मेमोरियल स्कूल में उक्त तीनों नृत्यों की प्रदर्शनी एवं धोबिया नृत्य की प्रस्तुति की गई, जिसमें बडी संख्या म छात्र–छात्राये शामिल हुई और इन विधाओं क बारे में जाना।

कार्यक्रम का शुभारम्भ संजीव पाण्डेय, दिनेश सिंह सैनी, रमाकान्त वर्मा, ध्रुवचन्द मौर्य एवं दीनानाथ लाल श्रीवास्तव ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्ज्वलन करक किया। धोबिया नृत्य खांटी लोक म जन्मा एक पारपरिक प्रदर्शनकारी कला है, जो लोक जीवन मेंलोक रंजन सेज यादा ग्रामीणो के जीवन मे उल्लास भरन का काम करती हैं। ध ोबिया नृत्य की परम्परायेंसभी क्षेत्रों में मौखिक ही है। इसका कोई लिखित रुप नही मिलता है। धोबी समुदाय के अशिक्षित या अल्प शिक्षित लोग ही इस परंपरा के वाहक है।

समूहन कला संस्थान के इस पुनीत प्रयास में जीवन राम एव दल के साथियों ने अपनी पारम्परिक धोबिया नृत्य की लुभावनी प्रस्तुति पेश की और जम करता लियॉ बटोरी। इसनृत्य में नर्तक और एक लिल्ली घोड़ी के साथ नृत्य करन वाले कलाकार और वादक वृन्द की भूमिका भी अहम दिखाई पड़ी। अपने पारंपरिक परिधान घाघरा, पैजामा, पगड़ी के साथ कलाकार खूबजमे, वहीं वादय यन्त्रों में पखावज, कसावर, डेढ़ताल, मजीरा, कमर मे बधीं घंटियॉ रणसिंहा ने आकर्षण और कौतूहल के साथ–साथ धोबिया नृत्य के पारंपरिक स्वरुप को उपस्थित किया। जीवन राम के साथ कलाकारों में रामजनम, नन्दू, विजय राकेश लौट सोन, अजय लल्लन आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का प्रबन्ध ान अजय उपाध्याय और संचालन संजीव पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों एवं छात्र–छात्राओं ने धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य पर लगाई गई एक आकर्षक चित्र प्रदर्शनीको देख करकईजानकारियॉप्राप्तकी।संस्था के निदेशकराजकुमार शाह ने ध न्यवादज्ञापनकरतेहुए कहा की बदलते परिवेश में सामाजिक ताना–बाना इस कदर बद गया ह कि धोबिया नृत्य जै पारम्परिकलोक नृत्यों की क समाप्त होगयी है।इससेभारत क परम्परागत लोक संस्कृति क भी क्षति पहुची है।वर्तमान इस जातिय समुदाय के क सीमित लाग ही अपनी इ पारम्परिक विधा को आंशिक र से अपनाये हुए हैं क्योकि सामाजिक बदलाव साथ–साथ सामंजस्य का अभ महसूस कर रहे हैं और उपेक्षि जीवन जी रहे हैं। अप पारम्परिक नृत्य के प्रति उ सम्मान और रोजी–रोटी अभाव जान पडता है। अत: बचाने के लिए इनकी सुर और हित का माहौल पैदा कर होगा।

अमर उजाला | आजमगढ़ | वाराणसी | शनिवार | 22 अगस्त 2015

कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन कैप्शन । अमर उजाला

धोबिया एवं जांधिया नृत्य से मन मोहा

बच्चों ने प्रदर्शनी के जरिये जाना नृत्य का इतिहास

अमर उजाला ब्यूरो

आजमगढ़। समूहन कला संस्थान के तत्वावधान में विलुप्त प्रायः लोक संस्कृति के संवर्धन के उद्देश्य से जिले के विभिन्न विद्यालयों में 'अपनी लोक संस्कृति को जाने-पहचाने' कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहले सत्र में 'महक माटी की' प्रस्तुत की गई। जिसमें विलुप्त हो रही लोक संस्कृति धोबिया मेमोरियल स्कूल में प्रदर्शनी एवं धोबिया नृत्य की प्रस्तुति की गई। शुरुआत संजीव पांडेय, दिनेश सिंह सैनी, रमाकांत वर्मा, ध्रुवचंद मौर्य और दीनानाथ लाल श्रीवास्तव ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्वलित कर किया।

इसके बाद जीवन राम और साथियों ने पारंपरिक धोबिया नृत्य की लुभावनी प्रस्तुति दी। इस नृत्य में नर्तक और एक लिल्ली घोड़ी के साथ नृत्य करने वाले कमर मे बधीं घंटियां रणसिंहा ने आकर्षण और कौतूहल के साथ-साथ धोबिया नृत्य के पारंपरिक स्वरुप को प्रस्तुत किया।

जीवन राम के साथ कलाकारों में रामजनम, नंदू, विजय, राकेश, लौटू, सोनू, अजय, लल्लन आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया। उधर प्रदर्शनी में छात्र-छात्राओं ने धोबिया, कहरउवा एव जांधिया नृत्य की कई जानकारियां

आज

वाराणसी, २२ अगस्त, २०१५ ८

महक उठी माटी

आजमगढ़। कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी संस्था समूहन कला संस्थान द्वारा विलुप्त प्राय: लोक संस्कृति के संवर्धन, संवरण, संरक्षण एवं प्रसार के उद्देश्यों से जनपद के विभिन्न विद्यालयों में किशोर युवा छात्र-छात्राओं के लिये अपनी लोक संस्कृति को जाने पहचाने कार्यक्रम आयोजित की गयी। पहली श्रृखला महक उठी माटी की प्रस्तुति हुई जिसमें उप्र की विलुप्त प्राय: लोक संस्कृति धोबिया, कहरउवा एवं जोगिया नृत्य का प्रदर्शन एवं इन विधाओं की चित्र प्रदर्शनी को शामिल किया गया है। कार्यक्रम के पहले दिन प्रतिभा निकेतन इण्टर कालेज एवं एएनएम मेमोरियल स्कूल में उक्त तीनों नृत्यों की प्रस्तुति एवं धोबिया नृत्य की कार्यशाला की गयी जिसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्रायें शामिल हुई और इन विधाओं के बारे में जाना। कार्यक्रम का शुभारम्भ संजीव पाण्डेय, दिनेश सिंह सैनी, रमाकांत वर्मा, ध्रुवचन्द्र गौर्य एवं दीनानाथ श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवल करके किया। धोबिया नृत्य खांटी लोक में जन्जा एक पारंपरिक प्रदर्शनकारी कला है जो लोक जीवन में लोकरंजन से ज्यादा ग्रामीणों के जीवन में उल्लासा भरने का काम करती है। धोबिया नृत्य की परम्परायें सभी क्षेत्रों में मौखिक ही है। इसका कोई लिखित रूप नहीं मिलता है। समूहन कला संस्थान के इस पुनीत प्रयास में जीवन राम एवं दल के साथियों ने अपनी पारम्परित धोबिया नृत्य की लुभावनी प्रस्तुति पेश की और जमकर तालियां बटोरी। इस नृत्य में नर्तक और एक लिल्ली घोड़ी के साथ नृत्य करने वाले कंलाकार और वादक वृन्द की भूमिका भी अहम दिखाई पड़ी। अपने पारम्परिक परिधान घाघरा, पैजामा, पगड़ी के साथ कलाकार खूब जमे, वहीं वाद्य यंत्रों में पखावज, कसावर, डेड़ताल, मजीरा, कमर में बंधी घंटियां रणसिंहा ने आकर्षण और कौतूहल के साथ साथ धोबिया नृत्य के पारंपरिक स्वरूप को उपस्थित किया। जीवन राम के साथ कलाकारों में रमजनम, नन्दू, विजय, राकेश,लौटू, सोनू, अजय, लल्लन आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया।

बच्चों ने लिया लोक नृत्यों का आनंद

सिधारी स्थित एक स्कूल में धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

आजमगढ़ : सांस्कृतिक जीवन की जीवंत रसधारा में लोक नृत्यों व गीतों का अलग अंदाज है। पुरातन काल से ग्रामीण अंचलों में जन्मी अलग-अलग विधा की लोककलाओं की परंपरा आधुनिकता के दौर में धूमिल हो गई है। इन विधाओं के संरक्षण एवं बच्चों को लोककलाओं से रूबरू कराने के लिए रंगकर्म से जुड़ी संस्था समूहन कला संस्थान का प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

संस्था द्वारा आयोजित महक माटी की कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार को नगर के एक निजी विद्यालय के बच्चों को कलाकारों ने धोबिया, कहरवा, जांघिया व फरुवाही जैसे लोकनृत्यों की प्रस्तुति कर उनका दिल जीत लिया। संस्था के निदेशक राजकुमार शाह के इस प्रयास को बच्चों और शिक्षकों ने सराहा। जीवन राम की टीम में धोबिया नृत्य की प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया।

इस मौके पर लोक कलाओं पर आधारित प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भोजपुरी साहित्यकार रामप्रकाश शुक्ल निर्मोही की उपस्थिति आकर्षण का केन्द्र रही।

राष्ट्रीय सहारा
आजमगढ़
3
वाराणसी । रविवार • 23 अगस्त • 2015
www.samaylive.com

'महक माटी की' में दिखी लोक परंपराओं की झलक

आजमगढ़ (एसएनबी)। लोकनृत्य परम्परायें भारत की सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्तरस धारा है। ग्रामीण अंचलों में पुरातन काल से जन्मी अलग-अलग क्षेत्रों की अलग-अलग लोकनृत्य परम्परायें हैं, जो आधुनिकता के दौर में धूमिल पड़ गई हैं। इस के संरक्षण की दिशा में समाज का ध्यान आकर्षित करने के लिए 'समूहन कला संस्थान' द्वारा जनपद के विभिन्न विद्यालयों में नई पीढ़ी को इससे रुबरु कराने का श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम आयोजित किया है।समूहन द्वारा आयोजित ''महक माटी की'' के इस आयोजन में पूर्वी उप्र के कुछ विलुप्त प्रायः लोकनृत्य जैसे धोबिया, कहरउवा आदि को शामिल किया गया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ डालिम्स सनबीम स्कूल के प्रबंधन की ओर से कलाकारों, आयोजको का स्वागत कर किया गया। जीवन राम एवं दल के साथियों ने अपनी पारम्परिक धोबिया नृत्य की सराहनीय प्रस्तुति दी। निदेशक राजकुमार शाह ने इस नृत्य पर तैयार वृत्त संकलन के द्वारा धोबिया नृत्य की उपज, इसके पारंपरिक स्वरुप, पहनावा, वाद्य यन्त्रों आदि की जानकारी चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया और कहा कि समय के साथ तेजी से बदलता आधुनिक समाज जिस प्रकार अपनी लोक संस्कृति की अनदेखी कर रहा है, उससे ये लोक नृत्य विलुप्त प्रायः होने के कगार पर है। बड़ी संख्या में विद्यार्थियो और अभिभावकों ने प्रदर्शनी के साथ-साथ धोबिया नृत्य का प्रदर्शन भी देखा, जिसे गाजीपुर के जीवन राम एव दल के साथियों ने प्रस्तुत किया। कलाकारों में राकेश, लौटू, सोनू, अजय, लल्लन, रामजनम, नन्दू,विजय आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का प्रबंधन अजय उपाध्याय और संचालन संजीव पांड़ेय ने किया।कार्यक्रम ''महक माटी की'' के इस अवसर पर भोजपुरी साहित्यकार विराम प्रकाश शुक्ल 'निर्मोही', अमित धनधनिया, अलोक खंडेलिया, दिनेश सिंह सैनी, अभिभावकगण, अध्यापक व अध्यापिकाये और बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम का आनन्द लिया।

लोक नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

पायनियर
लखनऊ, रविवार 23 अगस्त, 2015

दूसरे दिन भी बच्चों ने लिया लोक नृत्यों का आनंद

आजमगढ़। सांस्कृतिक जीवन की जीवंत रसधारा में लोक नृत्यों व गीतों का अलग अंदाज है। पुरातन काल से ग्रामीण अंचलों में जन्मी अलग-अलग विधा की लोककलाओं की परंपरा आधुनिकता के दौर में धूमिल हो गई है। इन विधाओं के संरक्षण एवं बच्चों को लोककलाओं से रूबरू कराने के लिए रंगकर्म से जुड़ी संस्था समूहन कला संस्थान का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। संस्था द्वारा आयोजित महक माटी की कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार को नगर के एक निजी विद्यालय के बच्चों को कलाकारों ने धोबिया, कहरवा, जांघिया व फरुवाही जैसे लोकनृत्यों की प्रस्तुति कर उनका दिल जीत लिया। संस्था के निदेशक राजकुमार शाह के इस प्रयास को बच्चों और शिक्षकों ने सराहा। जीवन राम की टीम में धोबिया नृत्य की प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया। इस मौके पर लोक कलाओं पर आधारित प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भोजपुरी साहित्यकार रामप्रकाश शुक्ल निर्मोही की उपस्थिति आकर्षण का केन्द्र रही।

आज
वाराणसी, २३ अगस्त ,२०

विलुप्त संस्कृति को सहेजने की हुई कोशिश

आजमगढ़। सांस्कृतिक जीवन की जीवंत रसधारा में लोक नृत्यों व गीतों का अलग अंदाज है। पुरातन काल से ग्रामीण अंचलों में जन्मी अलग-अलग विधा की लोककलाओं की परंपरा आधुनिकता के दौर में धूमिल हो गई है। इन विधाओं के संरक्षण एवं बच्चों को लोककलाओं से रूबरू कराने के लिए रंगकर्म से जुड़ी संस्था समूहन कला संस्थान का प्रयास अत्यंत सराहनीय है। संस्था द्वारा आयोजित महक माटी की कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार को नगर के एक निजी विद्यालय के बच्चों को कलाकारों ने धोबियाए कहरवाए जांघिया व फरुवाही जैसे लोकनृत्यों की प्रस्तुति कर उनका दिल जीत लिया। संस्था के निदेशक राजकुमार शाह के इस प्रयास को बच्चों और शिक्षकों ने सराहा। जीवन राम की टीम में धोबिया नृत्य की प्रस्तुति से लोगों का मन मोह लिया। इस मौके पर लोक कलाओं पर आधारित प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भोजपुरी साहित्यकार रामप्रकाश शुक्ल निर्मोही की उपस्थिति आकर्षण का केन्द्र रही।

समूहन द्वारा लोक नृत्य की प्रस्तुति

आजमगढ़। लोक नृत्य परम्परायें भारत की सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्त रस धारा है। ग्रामीण अंचलो में पुरातन काल से जन्मी अलग–अलग क्षेत्रों की अलग–अलग लोक नृत्य परम्परायें है, जो आधुनिकता के दौर मे धूमिल पड़ गई हैं। इसके संरक्षण की दिशा मे समाज का ध्यान आकर्शित करने के लिए 'समूहन कला संस्थान' द्वारा जनपद के विभिन्न विद्यालयों में नई पीढ़ी को इससे रुबरु परिचित कराने का श्रृखलाबद्ध कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

समूहन द्वारा आयोजित "महक माटी की" के इस आयोजन मे पूर्वी उ0 प्र0 के कुछ विलुप्त प्रायः लोक नृत्य यथा धोबिया, कहरउवा, जांघिया, फरुवाही नृत्य को शामिल किया गया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ डालिम्स सनबीम स्कूल के प्रबंधन की ओर से कलाकारों, आयोजको का स्वागत कर किया गया। जीवन राम एवं दल के साथियों ने अपनी पारम्परिक धोबिया नृत्य की सराहनीय प्रस्तुति दी। निदेशक राजकुमार शाह ने इस नृत्य पर तैयार वृत्त संकलन के द्वारा धोबिया नृत्य की उपज, इसके पारंपरिक स्वरुप, पहनावा, वादय यन्त्रो आदि की जानकारी चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया और कहा कि समय के साथ तेजी से बदलता आधुनिक समाज जिस प्रकार अपनी लोक संस्कृति की अनदेखी कर रहा है, उससे ये लोक नृत्य विलुप्त प्रायः होने के कगार पर है। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों और अभिभावको ने प्रदर्शनी के साथ–साथ धोबिया नृत्य का प्रदर्शन भी देखा, जिसे गाजीपुर के जीवन राम एव दल के साथियों ने प्रस्तुत किया। कलाकारों में राकेश, लौटू, सोनू, अजय, लल्लन, रामजनम, नन्दू, विजय, आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का प्रबन्धन अजय उपाध्याय और संचालन संजीव पाण्डेय ने किया।

इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है। इनके गीतों में कुछ पौराणिक उपख्यान और देवी देवताओं का स्तुति वन्दन आदि भी होता है। इसके अलावा गायन में सामाजिक रीति–रिवाजों और सामाजिक कुरीतियों को भी रोचक ढंग से गाया जाता है। प्रकृति ही उनकी गुरु होती है। जिसके आंचल में बैठकर इन लोक कलाओं की ककहरी बनती है। प्राकृतिक दृष्यों का वर्णन, वृक्ष वनस्पतियों, जीवो, पशुओं का जिक्र इनके गीतों में होता है।

कार्यक्रम "महक माटी की" के इस अवसर पर भोजपुरी साहित्यकार कवि राम प्रकाश शुक्ल 'निर्मोही', अमित धनधनिया, अशोक खण्डेलिया, दिनेश सिंह सैनी, अभिभावकगण, अध्यापक अध्यापिकायें और बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम का आनन्द लिया।

अमर उजाला
23 अगस्त 2015

बिया नृत्य को लोगों ने सराहा

जमगढ़। महक माटी की कार्यक्रम के तहत समूहन कला
ान द्वारा शनिवार को डालिम्स सनबीम स्कूल में कार्यक्रम
ोजित हुआ। गाजीपुर से आए जीवन राम और उनके साथियों
ारंपरिक धोबिया नृत्य की प्रस्तुति दी। निदेशक राजकुमार
ने इस नृत्य पर तैयार वृत्त संकलन द्वारा धोबिया नृत्य की
, इसके पारंपरिक स्वरूप, पहनावा और वाद्य यंत्रों की
कारी चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत की। कलाकारों में
श, लौटू, सोनू, अजय, लल्लन, रामजनम, नंदू, विजय आदि
राहनीय प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का प्रबंधन अजय उपाध्याय
संचालन संजीव पांडेय ने किया। इस मौके पर साहित्यकार
प्रकाश शुक्ल, अमित धनधनिया, अशोक खंडेलिया थे।

पायोनियर
लखनऊ, शनिवार, 22 अगस्त, 2015

विलुप्त हो रही लोक नृत्यों की विधा को बच्चों ने परखा

प्रदर्शनी व धोबिया नृत्य की प्रस्तुति देख हुए भावविभोर

आजमगढ़। विलुप्त हो रही लोक संस्कृति के संवर्धन, संरक्षण एवं प्रसार के उद्देश्य से बच्चों को लोक विधाओं से अवगत कराने के लिए आगे आयी संस्था समूहन कला संस्थान की पहल को लोगों ने सराहा। नगर के अतलस पोखरा स्थित प्रतिभा निकेतन इंटर कालेज व एएन मेमोरियल स्कूल में शुक्रवार को संस्था से जुड़े कलाकारों ने लोक नृत्यों से संबंधित प्रदर्शनी का आयोजन करते हुए बच्चों को धोबिया नृत्य की विधा से अवगत कराया। विलुप्त हो रही इस लोककला को बच्चों ने खूब सराहा। कलाकारों की प्रस्तुति से बच्चे भाव-विभोर हो गये। रंगकर्म से जुड़ी संस्था समूहन कला संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम महक माटी की प्रस्तुति देने वाले कलाकारों का बच्चों द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ संजीव पांडेय, दिनेश सिंह सैनी, रमाकांत वर्मा, ध्रुवचंद मौर्य एवं दीनानाथ लाल श्रीवास्तव द्वारा संयुक्त रुप से दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। बच्चों के बीच धोबिया नृत्य कलाकार जीवन राम व उनके साथियों द्वारा धोबिया नृत्य की लुभावनी प्रस्तुति ने लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पारम्परिक परिधान एवं वाद्ययंत्रों के साथ कलाकारों द्वारा की गई प्रस्तुति को सभी ने सराहा। इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में चित्रों के माध्यम से बच्चों ने धोबिया, कहरवा एवं जांघिया नृत्य के बारे में जानकारी प्राप्त की। धोबिया नृत्य कलाकारों की टीम में जीवन राम के साथ रामजनम, नंदू, विजय, राकेश, लौटू, सोनू, अजय, लल्लन आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया। अंत में समूहन कला संस्थान के निदेशक राजकुमार शाह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनसंदेश टाइम्स
रविवार, 23 अगस्त, 2015

धोबिया नृत्य की बारीकियों से रूबरू हुए लोग

धोबिया नृत्य की चित्र प्रदर्शनी को देखते लोग

आजमगढ़। लोक नृत्य परम्परायें भारत की सांस्कृतिक जीवन की एक जीवन्त रसधारा है। ग्रामीण अंचलों में पुरातन काल से जन्मी अलग-अलग जातियों की अलग-अलग लोक नृत्य परम्परायें हैं, जो आधुनिकता के दौर में धूमिल पड़ गई हैं। इसके संरक्षण की दिशा में समाज का ध्यान आकर्षित करने के लिए 'समूहन कला संस्थान' द्वारा जनपद के विभिन्न विद्यालयों में नई पीढ़ी को इससे रुबरु परिचित कराने का श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम आयोजित किया गया है।

समूहन द्वारा आयोजित 'महक माटी की' के इस आयोजन में पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ विलुप्तप्राय लोकनृत्य यथा धोबिया, कहरउवा, जांघिया, [illegible]वाही नृत्य को शामिल किया गया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ डालिम्स [illegible]ीम स्कूल के प्रबंधन की ओर से कलाकारों, आयोजकों का स्वागत कर [illegible] गया। जीवन राम एवं दल के साथियो ने अपनी पारम्परिक धोबिया [illegible] की सराहनीय प्रस्तुति दी। निदेशक राजकुमार शाह ने इस नृत्य पर तैयार [illegible] संकलन के द्वारा धोबिया नृत्य की उपज, इसके पारंपरिक स्वरुप, पहनावा, वाद्य यन्त्रों आदि की जानकारी चित्र प्रदर्शनी के माध्यम से प्रस्तुत किया और कहा कि समय के साथ तेजी से बदलता आधुनिक समाज जिस प्रकार अपनी लोक संस्कृति की अनदेखी कर रहा है, उससे ये लोक नृत्य विलुप्तप्राय होने के कगार पर है। बड़ी संख्या में विद्यार्थियों और अभिभावको ने प्रदर्शनी के साथ-साथ धोबिया नृत्य का प्रदर्शन भी देखा, जिसे गाजीपुर के जीवन राम एवं दल के साथियों ने प्रस्तुत किया। कलाकारों में राकेश, लौटू, सोनू, अजय, लल्लन, रामजनम, नन्दू, विजय, आदि ने सराहनीय प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का प्रबन्धन अजय उपाध्याय और संचालन संजीव पाण्डेय ने किया।

इस सांस्कृतिक विरासत के लोग जातीय समुदाय विशेष से सम्बन्ध रखते हैं जो समाज के सर्वथा अशिक्षित वर्ग से रहे हैं, परन्तु केवल पारम्परिक ज्ञान के सहारे इनकी विधा का हुनर और कुशलता देख कर अचम्भा होता है। इनके गीतों में कुछ पौराणिक उपख्यान और देवी देवताओं का स्तुति वन्दन आदि भी होता है। इसके अलावा गायन में सामाजिक रीति-रिवाजो और सामाजिक कुरीतियों को भी रोचक ढंग से गाया जाता है। प्रकृति ही उनकी गुरू होती है। जिसके आंचल में बैठक इन लोक कलाओं की ककहरी बनती है। प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, वृक्ष वनस्पतियों, जीवों, पशुओं का जिक्र इनके गीतों में होता है।

कार्यक्रम 'महकमाटी की' के इस अवसर पर भोजपुरी साहित्यकार कवि रामप्रकाश शुक्ल 'निर्मोही', अमित धनधनिया, अशोक खण्डेलिया, दिनेश सिंह सैनी, अभिभावकगण, अध्यापक अध्यापिकायें और बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम का आनन्द लिया।

धोबिया नृत्य ने छात्राओं का मन मोहा

- अग्रसेन कालेज में आयोजित हुआ कार्यक्रम

आजमगढ़ : भौतिकवादी जीवन, आधुनिकीकरण का अंधानुकरण के प्रभाव से लोक सांस्कृतिक परंपराओं से कटाव या दुराव के कारण विलुप्त होने के कगार पर है। ऐसे में समूहन संस्थान ने अवगाहन-महक माटी से कार्यक्रम की दूसरी श्रृंखला में अग्रसेन कालेज में धोबिया नृत्य प्रस्तुत किया गया। इसकी प्रस्तुति ने सभी छात्राओं का मन मोह लिया।

अग्रसेन कालेज में धोबिया नृत्य प्रस्तुत करते गाजीपुर से आए कलाकार।

धोबिया नृत्य के कलाकार स्व. बाबूनंदन के प्रपौत्र संजय कुमार संभाल रहे है। कार्यक्रम का शुभारंभ धोबिया, कहरउवा एवं जांघिया नृत्य पर अथक परिश्रम से संकलित प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुआ। रोटरी क्लब के मंडलाध्यक्ष वेदप्रकाश एवं रीता प्रकाश ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। धोबिया नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अतरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती है। नर्तक के कमर में एक चौड़ी पट्टी जिस पर ढेर सारी घंटिया लगी होती है। नृत्य के नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वाद्य यंत्रों के साथ संगतपूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है। इन विधाओं के कलाकार ज्यादातर अशिक्षित और अत्याधेक निर्धन है। आधुनिक बदले हुए सामाजिक ढांचे में अपने आत्मसम्मान का अभाव पाते है तो दूसरी तरफ अपने पारंपरिक नृत्य को समाज के अन्य वर्गो द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने के कारण इससे दूर हो रहे है।

अवगाहन-महक माटी से के माध्यम से इस पारंपरिक लोक नृत्य के महत्व को लोगों के सामने उजागर किया गया। निदेशक राजकुमार शाह ने कहा कि धन प्रधान समाज में ये लोक कलाकार पारंपरिक संदर्भों में अपनी संस्कृति से विमुख होने के लिए मजबूर है।

राष्ट्रीय सहारा आजमगढ़ हैलो
वाराणसी । मंगलवार • 25 अगस्त • 2015

अवगाहन : 'महक माटी से' में दिखी परंपराओं की झलक

आजमगढ़ (एसएनबी)। भौतिकतावादी जीवन, आधुनिकीकरण का अंधानुकरण के प्रभाव से लोक सांस्कृतिक परंपराओं से कटाव या दुराव के कारण लोक विद्याएं विलुप्त प्रायः होने के कगार पर है। समय रहते इसके बचाव के प्रयास हेतु लोगों को ध्यान दिलाने के लिए 'समूहन कला संस्थान' ने "अवगाहन- महक माटी से" कार्यक्रम की दूसरी श्रृंखला का आयोजन किया। इसमें पहले दिन कई देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके ख्यातिलब्ध धोबिया नृत्यके कलाकार स्वर्गीय बाबूनन्दन जी के दल ने जिसे अब उनके प्रपौत्र संजय कुमार संभाल रहे है, अपने साथी कलाकारो के साथ नृत्य प्रस्तुत किया। इसके अगले दिन जांघिया अर्थात फरुवाही नृत्य की प्रस्तुति की जायेगी।

इस आयोजन के द्वारा समूहन ने विभिन्न विद्यालयों में नई पीढ़ी को लोक की इस थाती से मिलवाने का सराहनीय बीड़ा उठाया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य पर अथक परिश्रम से संकलित प्रदर्शनी के उदद्घाटन से हुआ, रोटरी क्लब के मण्डलाध्यक्ष वेद प्रकाश एवं श्रीमती रीता प्रकाश ने दीप प्रज्ज्वलन करके शुभारम्भ किया। श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय और श्री अग्रसेन कन्या इण्टर कॉलेज की बड़ी संख्या में छात्राओं और तमाम अतिथियों ने इसविधा का जीवंत रुप देखा। इस नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अन्तरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती हैं,नर्तक के कमर में एक चौड़ी पट्टी जिस पर ढेर सारी घंटियां लगी होती हैं, नृत्य में नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वाद्य यन्त्रों के साथ संगत पूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है जो विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं। इन विधाओं के कलाकार ज्यादातर अशिक्षित और अत्यधिक निर्धन है। आधुनिक बदले हुए सामाजिक ढांचे में अपने आत्मसम्मान का अभाव पाते है तो दुसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के अन्य वर्गों द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने के कारण इससे दूर हो रहे है। आज "अवगाहन- महक माटी से" के माध्यम से इस पारंपरिक लोक नृत्य के महत्व को लोगो के सामने उजागर किया गया। 'समूहन कला संस्थान' की ओर से सभी का आभार व्यक्त करते हुए निदेशक राजकुमार शाह ने कहा की धन प्रधान समाज में ये लोक कलाकार पारम्परिक संदर्भों में अपनी संस्कृति से विमुख होने के लिए विवश है। "अवगाहन" की अगली श्रृंखला मेंजांघिया अर्थात फरुवाही नृत्य की प्रस्तुति की जायेगी।

अमर उजाला वाराणसी । मंगलवार । 25 अगस्त 2015

रंगारंग कार्यक्रम में मचा धमाल

आजमगढ़। 'समूहन कला संस्थान के तत्वावधान में सोमवार को श्री अग्रसेन कन्या इंटर कालेज में धोबिया नृत्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। शुभारंभ रोटरी क्लब के मंडलाध्यक्ष वेद प्रकाश एवं रीता प्रकाश ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। बड़ी संख्या में उपस्थित छात्राओं ने धोबिया, कहरउवा और जांघिया नृत्य विधा का जीवंत रूप देखा। अंत में संस्थान के निदेशक राजकुमार शाह ने कहा की धन प्रधान समाज में ये लोक कलाकार पारंपरिक संदर्भों में अपनी संस्कृति से विमुख होने के लिए मजबूर हैं। अगली पीढ़ी अपनी पारंपरिक लोक संस्कृति का अभ्यास करने में शर्म महसूस करती है, क्योंकि वे शहरी जीवन अपनाने की इच्छा रखते हैं और पारंपरिक संस्कृति के नृत्य को पिछड़ेपन की निशानी समझते है।

आज वाराणसी, २५ अगस्त, २०१५ ८

विलुप्त हो रही संस्कृति को बचाने की पहल

आजमगढ़। भौतिकवादी जीवन, आधुनिकरण का अंधानुकरण के प्रभाव से लोक सांस्कृतिक परम्पराओं से कटाव या दुराव के कारण लोक विधायें विलुप्त प्राय: होने के कगार पर हैं। समय रहते इसके बचाव के प्रयास हेतु लोगों को ध्यान दिलाने के लिये समूहन कला संस्थान ने अवगाहन महक माटी से कार्यक्रम की दूसरी श्रृंखला का आयोजन किया। इसमें पहले दिन कई देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके ख्यातिलब्ध धोबिया नृत्य के कलाकार स्वर्गीय बाबूनन्दन के दल ने जिसे अब उनके प्रपौत्र संजय कुमार संभाल रहे हैं अपनी साथी कलाकारों के साथ नृत्य प्रस्तुत किया। इसके अगले दिन जांघिया अर्थात फरूवाही नृत्य की प्रस्तुति की जायेगी।

इस आयोजन के द्वारा समूहन ने विभिन्न विद्यालयों में नई पीढ़ी को लोक की इस थाती से मिलवाने का सराहनीय बीड़ा उठाया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ धोबिया, कहरउवा एवं जांघिया नृत्य पर अथक परिश्रम से संकलित प्रदर्शनी के

जनसंदेश टाइम्स
मंगलवार, 25 अगस्त, 2015

नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली

आजमगढ़। भौतिकतावादी जीवन, आधुनिकीकरण का अंधानुकरण के प्रभाव से लोक सांस्कृतिक परंपराओं से कटाव या दुराव के कारण लोक विधायें विलुप्त प्राय होने के कगार पर है। समय रहते इसके बचाव के प्रयास हेतु लोगों को ध्यान दिलाने के लिए समूहन कला संस्थान ने अवगाहन-महक माटी से कार्यक्रम की दूसरी श्रृंखला का आयोजन किया। इसमें पहले दिन कई देशों में अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके ख्यातिलब्ध धोबिया नृत्य के कलाकार स्वर्गीय बाबू नन्दन के दल ने जिसे अब उनके पौत्र संजय कुमार संभाल रहे है, अपने साथी कलाकारो के साथ नृत्य प्रस्तुत किया। इसके अगले दिन जांघिया अर्थात फरुवाही नृत्य की प्रस्तुति की जायेगी।आयोजन द्वारा समूहन ने विभिन्न विद्यालयों में नई पीढ़ी को लोक की इस थाती से मिलवाने का सराहनीय बीड़ा उठाया है। कार्यक्रम का शुभारम्भ धोबिया, कहरउवा एव जांघिया नृत्य पर अथक परिश्रम से संकलित प्रदर्शनी के उदद्घाटन से हुआ, रोटरी क्लब के मण्डलाध्यक्ष वेद प्रकाश एवं श्रीमती रीता प्रकाश दीप प्रज्वलन करके शुभारम्भ किया। श्री अग्रसेन महिला महाविद्यालय और श्री अग्रसेन या इण्टर कॉलेज की बड़ी संख्या में छात्राओं और अतिथियों ने इस विधा का जीवंत रुप देखा। नृत्य में भाषा से ज्यादा अहम नृत्य शैली है जिसमें अन्तरंग अभिव्यक्तियां प्रकट होती हैं।

नर्तक के कमर में एक चौड़ी पट्टी जिस पर ढेर सारी घंटियां लगी होती हैं, नृत्य में नर्तक कमर को आगे पीछे लचकाकर थाप और वाद्य यन्त्रों के साथ संगत पूर्ण नृत्य प्रस्तुत करता है जो विशेष आकर्षण उत्पन्न करती हैं। इन विधाओं के कलाकार ज्यादातर अशिक्षित और अत्यधिक निर्धन है। आधुनिक बदले हुए सामाजिक ढाँचे में अपने आत्मसम्मान का अभाव पाते है तो दूसरी तरफ अपने पारम्परिक नृत्य को समाज के अन्य वर्गो द्वारा निम्न दृष्टि से देखे जाने के कारण इससे दूर हो रहे है। सोमवार को अवगाहन-महक माटी से के माध्यम से इस पारंपरिक लोक नृत्य के महत्व को लोगो के सामने उजागर किया गया।

समूहन कला निदेशक राजकुमाार शाह ने कहा कि धन प्रधान समाज में ये लोक कलाकार पारम्परिक संदर्भो में अपनी संस्कृति से विमुख होने के लिए मजबूर है। अगली पीढी अपनी पारंपरिक लोक संस्कृति का अभ्यास करने में शर्म महसूस करती है, क्योंकि वे शहरी जीवन अपनाने की इच्छा रखते है और पारंपरिक संस्कृति के नृत्य को पिछेपन या गवांरपन की निशानी समझते है।

ऐसे में इस थाती को इसकी लोक भाषा के स्वरूप को बचाये रखने की आवश्यकता है।

धोबिया नृत्य का प्रदर्शन करते कलाकार

जागरण
वाराणसी, 26 अगस्त 2015 दैनिक जागरण | 7

नृत्य से मोहा लोगों का मन

समूहन कला संस्थान का अवगाहन महक माटी कार्यक्रम का समापन

आजमगढ़ : समूहन कला संस्थान द्वारा अवगाहन-महक माटी से कार्यक्रम के अंतर्गत जीडी ग्लोबल स्कूल में मंगलवार को जांघिया-फरुवाही नृत्य देखकर लोग प्रफुल्लित हो गए। इसी के साथ चार दिनों से चल रहे कार्यक्रम का समापन भी हो गया।

कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल के प्रबंधक व प्रधानाचार्य ने कलाकारों का स्वागत कर किया। शीतला प्रसाद एवं साथी कलाकारों ने फरुवाही नृत्य का शानदार प्रदर्शन किया। लोक परंपराओं का मनुष्य के जीवन के साथ नजदीक का संबंध है परन्तु आज ये परंपराएं तेजी से बदल रहे सामाजिक परिवेश में अस्तित्व के संकट से जूझते हुए विलुप्त होने की स्थिति में है। पूर्वी उप्र की इन लोक विधाओं में ऐसी ही एक लोक नृत्य है जांघिया या फरुवाही नृत्य। जंघिया अथवा जांगिया नृत्य अहिर समुदाय का जातीय नृत्य है। इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते है। कुछ क्षेत्रों में इसे फरुवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक कूद-कूद कर नाचते है। तरह-तरह के करतब दिखाते है। घुघरू टंगे होने के कारण इसका नाम जंघिया प्रचलित हुआ। वेशभूषा में कहीं घुंघरू युक्त जांघिया का प्रयोग मिलता है तो कहीं नहीं मिलता वहीं कलाकार केवल धोती गंजी पर नृत्य करते है तो कहीं राधाकृष्ण के प्रसंग या लीला के अभिनय को नृत्य में शामिल करते है। पूरी तरह से कृष्ण की तरह वस्त्र धारण करते है। इन सभी में घुंघरू टंगे हुए जांघिया और शारीरिक सौष्ठव मार्शल आर्ट वाले मूवमेंट अधिकांशत पाए गए है। इस अवसर पर रामप्रकाश शुक्ल निर्मोही ने कहा कि लोक

जीडी ग्लोबल स्कूल में समूहन कला संस्थान द्वारा महक माटी से फरूवाही नृत्य का दृश्य।

नृत्य समवेत प्रयत्न और जनमानस की स्वीकृति पर जीवित रहे है। आज हमें इसकी विशिष्टता को भूलना नहीं चाहिए जगदीश प्रसाद बर्नवाल कुंद ने कहा कि आज के मनोरंजन के साधनों से संस्कृति की क्षति हुई है। इसलिए अपनी संस्कृति को सजग रहकर बचाना है। कार्यक्रम का संचालन संजीव पांडेय ने तथा आभार ज्ञापन निदेशक राजकुमार शाह ने किया।

राष्ट्रीय सहारा आजमगढ़

वाराणसी । बुधवार • 26 अगस्त • 2015

भगवान श्रीकृष्ण का प्रिय है जांघिया नृत्य

जांघिया नृत्य प्रस्तुत करते कलाकार।

■ जीडी ग्लोबल स्कूल में 'अवगाहन-महक माटी से' सम्पन्न

आजमगढ़ (एसएनबी)। 'समूहन कला संस्थान' द्वारा 'अवगाहन-महक माटी से' कार्यक्रम के अंतर्गत जांघिया-फरुवाही नृत्य का प्रदर्शन किया गया। उलेखनीय है कि समूहन ने लोक सांस्कृतिक विरासत को नई पीढ़ी से परिचित कराने और उसके संचरण के उद्देश्य से पिछले चार दिनों से विभिन्न विद्यालयों में इसका आयोजन किया और समाज के सामने इसके विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकट कर लोगों का ध्यान इन लोकनृत्यों की ओर खींचने में सफल रही। कार्यक्रम की शुरूआत जीडी ग्लोबल पब्लिक स्कूल में प्रबंधक एवं प्रिंसिपल द्वारा कलाकारों के स्वागत के साथ हुआ। शीतला प्रसाद एवं साथी कलाकारों ने फरुवाही नृत्य का शानदार प्रदर्शन किया। पूर्वी उप्र की लोक विधाओं में ऐसी ही एक लोक नृत्य है जांघिया या फरुवाही नृत्य। जांघिया अथवा जांगिया नृत्य विशेषतः यादव (अहिर) समुदाय का जातिय नृत्य है, इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में इसे फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक के कूदकर नाचने और तरह-तरह के करतब दिखाने को इस नृत्य में शामिल करने के कारण, जिसे स्थानीय भाषा में फर्री कहा जाता है। नृत्य की वेशभूषा में एक विशेष प्रकार का जांघिया, जिस पर घुंघरू टंके होते हैं, के कारण इसका नाम जांघिया नाम प्रचलित हुआ है। इस समुदाय के लोगों में मान्यता है कि यह भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य है। इसकी शुरूआत द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा हुई है।भगवान श्रीकृष्ण जब ग्वाल सखाओं के संग गाय चराते थे तो समय व्यतीत करने के लिए और कंस की सेना के समानान्तर अपने समुदाय के लोगों को सशक्त बनाने हेतु इस नृत्य शैली का विकास हुआ। 'अवगाहन-महक माटी से' कार्यक्रम के अर्न्तगत इन कलाओं की जीवंतता बनाये रखने के लिए एक कार्य शाला भी कलाकारों के साथ संचालित की गई, इसे संबोधित करते हुए रामप्रकाश शुक्ल 'निर्मोही' ने कहा कि लोक नृत्य समवेत प्रयत्न और जनमानस की स्वीकृति पर जीवित रहे है, आज हमें इस की विशिष्टता को भूलना नहीं चाहिए। जगदीश प्रसाद बर्नवाल 'कुन्द' ने कहा कि आज के मनोरंजन के साधना से संस्कृति की क्षति हुई है, अतः सजग रहकर अपनी संस्कृति को बचाना है। संचालन संजीव पाण्डेय ने और आभार ज्ञापन समूहन के निदेशक राजकुमार शाह ने किया।

जनसंदेश टाइम्स
बुधवार, 26 अगस्त, 2015

कलाकारों ने जांघिया नृत्य का किया प्रदर्शन

गढ़। समूहन कला संस्थान द्वारा -महक माटी से कार्यक्रम के अन्तर्गत फरुवाही नृत्य का प्रदर्शन किया गया। है कि समूहन ने लोक सांस्कृतिक को नई पीढ़ी से परिचित कराने और उसके उद्देश्य से पिछले चार दिनों से। विभिन्न में इसका आयोजन किया है और समाज इसके विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओ को लोगों का ध्यान इन लोक नृत्यों की ओर सफल रहो है। कार्यक्रम की शुरूआत बल पब्लिक स्कूल मे प्रबंधक एवं

आयोजन

ाओं को बचाने के लिए समूहन
ा आयोजित हो रहे विविध कार्यक्रम

ा कलाकारों के स्वागत के साथ हुआ। द एवं साथी कलाकारों ने फरुवाही दार प्रदर्शन किया। लोकपरंपराओं का वन के साथ नजदीक का संबध है, ये परंपरायें तेजी से बदल रहे रिवेश में अस्तित्व के संकट से जूझते य होने की स्थिति में है। पूर्वी उत्तर लोक विधाओं मे ऐसी ही एक लोक या या फरुवाही नृत्य। जांघिया अथवा विशेषत: यादव (अहिर) समुदाय का

करतब दिखाते जांघिया नृत्य के कलाकार

जातीय नृत्य है। इसी कारण इसे अहिरवा नृत्य भी कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में इसे फरूवाही नृत्य भी कहा जाता है, क्योंकि इसे फार के साथ गाया बजाया जाता है। इसके अलावा नर्तक के कूद कर नाचने और तरह-तरह के करतब दिखाने को इस नृत्य में शामिल करने के कारण, जिसे स्थानीय भाषा में फरी कहा जाता है, इसे फरूवाही नृत्य कहा जाता है। अहीर जाति के नाम पर इसे अहिरवा और नृत्य

की वेशभूषा में एक विशेष प्रकार का जांघिया, जिस पर घुंघरू टंके होते हैं, के कारण इसका नाम जांघिया नाम प्रचलित हुआ है। यह नृत्य भोजपुरी भाषी इलाकों, पूर्वी उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों के यादव समुदाय में पाया जाता है। इस समुदाय के लोगो में मान्यता है कि यह भगवान श्रीकृष्ण का नृत्य है। इसकी शुरूआत द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा हुई है। भगवान श्रीकृष्ण जब

ग्वाल सखाओं के संग गाय चराते थे को व्यतीत करने के लिए और कं समानान्तर अपने समुदाय के लो बनाने या शारीरिक सौष्ठव प्राप्त नृत्य शैली का विकास हुआ। वेश घुंघरू युक्त जांघिया का प्रयोग मि नहीं मिलता। कहीं कलाकार केवल नृत्य करते हैं तो कहीं राधा कृ लीला के अभिनय को नृत्य में श कहीं पूरी तरह से कृष्ण की तरह अंगरखा, मुरली, जांघिया) धार सभी में घुंघरू टंके हुए जांघिया सौष्ठव (मार्शल आर्ट) अधिकांशतः पाये गये हैं। नृत्य शारीरिक सौष्ठव का प्रदर्शन भी के सहारे तरह-तरह के करतब किया जाता है। अवगाहन-महक के अर्न्तगत इन कलाओं की जीवं के लिए एक कार्यशाला भी क संचालित की गई। इसे संबो रामप्रकाश शुक्ल 'निर्मोही' ने क समवेत प्रयत्न और जनमानस जीवित रहे है। आज हमें इसव भूलना नहीं चाहिए। जगदीश कहा कि आज के मनोरंजन के को क्षति हुई है।